ART ORBIT

(A MULTILINGUAL, MULTIDISCIPLINARY MONTHLY JOURNAL, ISSN: 3107-670X)

Editor-in-Chief
Shivani Shah

Associate Editor
Kushagra Jain

Editor-in-Chief and Publisher:

Shivani Shah

Email: artorbit09@gmail.com

Mobile: +91 8619993231

Address: 187, Partapur Road, Opp. Rephral Hospital, Bagidora, District Banswara, Rajasthan – 327601

Associate Editor

Kushagra Jain

Editorial Members

- Dr. Rishika Verma, Assistant Professor, Department of Philosophy, School of Humanities and Social Sciences in Hemavati Nandan Bahuguna Garhwal University, Srinagar Garhwal, Uttarakhand, rishikaverma@hnbgu.ac.in , https://hnbgu.ac.in/node/9192
- Mr. Raj Kumar Singh, Assistant Professor, Institute of Fine Arts, School of Creative & Performing Arts, CSJM University, Kanpur, raj@csjmu.ac.in, https://csjmu.ac.in/all-faculty/raj-kumar-singh/
- Ms. Jyoti Singh, Assistant Professor, Fashion Design Dept., School of Journalism & Liberal Arts, DBUU, Dehradun, Fd.jyoti@dbuu.ac.in, https://www.dbuu.ac.in/academics/faculties.php?utm_source=Website&utm_medium=DBUU&utm_campaign=Admission2026
- Dr. manisha, Assistant Professor, Jain University, Banglore, rajawatmanisha@jainuniversity.ac.in, jainuniversity.ac.in

Advisory Board

- Mr.Santosh Kumar, Head of Department, Faculty of Fine Arts & Fashion Design, Ras Bihari Bose Subharti University, Dehradun, https://rbbsu.edu.in/faculty-list

Language Editors / Translators

- Ms. Nishtha Gupta – Hindi

ART ORBIT JOURNAL (Peer Review)

Copyright © 2025 by AUTHOR

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means without written permission from the Publisher.

संपादकीय

कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की चेतना, संवेदना और सांस्कृतिक विकास की जीवंत धारा है। समय के साथ समाज, विचार और जीवन-शैली में जो परिवर्तन आते हैं, कला उन्हें अपने भीतर समेटकर आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाती है। यही कारण है कि कला किसी भी युग का सबसे प्रामाणिक सांस्कृतिक दस्तावेज मानी जाती है।

आज का समय तीव्र तकनीकी परिवर्तन और वैश्विक संवाद का युग है। डिजिटल माध्यमों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और न्यू मीडिया ने कला के स्वरूप, प्रस्तुति और प्रभाव के नए आयाम निर्मित किए हैं। विशेष रूप से विज्ञापन कला और दृश्य संचार के क्षेत्र में तकनीक और रचनात्मकता का अभिनव समन्वय देखने को मिल रहा है, जहाँ सौंदर्यबोध, बाज़ार और मानवीय मनोविज्ञान एक साथ सक्रिय हैं। इसके बावजूद कला की मूल आत्मा—मानवीय संवेदनशीलता, कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता—आज भी उतनी ही सशक्त और प्रासंगिक है।

'आर्ट ऑर्बिट' का यह अंक परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक सार्थक सेतु निर्मित करने का प्रयास है। एक ओर भारत की लोक और शिल्प परंपराएँ—ब्रज के लोकगीत, चित्रकूट की लोक कलाएँ तथा मौखिक सांस्कृतिक धरोहर—हमारी सामाजिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखती हैं; वहीं दूसरी ओर समकालीन कला और डिजिटल प्रयोग वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय सृजनशीलता को नई पहचान दे रहे हैं। ये परंपराएँ केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि सामुदायिक ज्ञान, कौशल और जीवन-दर्शन की अमूल्य निधि हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी लोक एवं पारंपरिक कलाओं को केवल संग्रहालयों या इतिहास के पृष्ठों तक सीमित न रखें, बल्कि उन्हें शिक्षा, शोध, नवाचार और दैनिक जीवन से जोड़ें। कला के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों जैसे विषयों पर प्रभावी संवाद स्थापित किया जा सकता है। कला समाज को केवल सौंदर्य नहीं देती, बल्कि विचार, संवेदना और परिवर्तन की दिशा भी प्रदान करती है।

यह अंक इसी विश्वास के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है कि कला जीवन को अधिक मानवीय, संवेदनशील और समृद्ध बनाने की सबसे प्रभावशाली शक्ति है। हमारा प्रयास है कि 'आर्ट ऑर्बिट' विविध कला-विमर्शों, शोधपरक दृष्टिकोणों और नवाचारी अभिव्यक्तियों को एक साझा मंच प्रदान करे, ताकि रचनात्मकता की यह यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहे।

– संपादक

TABLE OF CONTENTS

आलेख का नाम (*Title of the Article*)	***लेखक का नाम*** (*Author Name*)	***पृष्ठ संख्या***	***आलेख की भाषा***
संपादकीय (*Editorial*)	***संपादक***	*Iii*	***हिन्दी***
डिजिटल इंडिया में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला के अंतर्गत उपभोक्ता की सोच और मार्किट को प्रभावित करते रचनात्मक विज्ञापन: एआई और न्यू मीडिया की भूमिका (*Creative Advertising Influencing Consumer Mindset and the Market within the Realm of Modern and Contemporary Indian Advertising Art in Digital India: The Role of AI and New Media*)	***रवि कांत पाण्डेय*** (*Ravi Kant Pandey*)	*41*	***हिन्दी***
Relational Aesthetics and the Transformation of Artistic Experience in Contemporary Art	***अजय पटेल*** (*Ajay Patel*)	*47*	***अंग्रेजी***
भारतीय कला में विविधता, निरंतरता और वैश्विक संवाद (*Pluralism, Continuity, and Global Dialogues in Indian Art*)	***नितिन गुप्ता*** (*Nitin Gupta*)	*53*	***हिन्दी***
मौखिक परम्पराओं के अंतर्गत ब्रज के लोकगीतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का विश्वस्तर पर प्रचार एवं प्रसार (*Promotion and propagation of Indian culture globally through oral traditions like folk songs of Braj*)	***बेबी शर्मा और संगीता श्रीवास्तव*** (*Babi Sharma & Sangeeta Srivastava*)	*63*	***हिन्दी***
चित्रकूट परिक्षेत्र के लोक शिल्प परम्परा में समुदाय, कौशल और पहचान (*Community, Skill and Identity in the Folk Craft Tradition of the Chitrakoot Region*)	***धीरेंद्र कुमार और डॉ. जय शंकर मिश्र*** (*Dhirendra Kumar & Dr. Jai Shankar Mishra*)	*69*	***हिन्दी***

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 41-46 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/YOJI2712

CREATIVE ADVERTISING INFLUENCING CONSUMER MINDSET AND THE MARKET WITHIN THE REALM OF MODERN AND CONTEMPORARY INDIAN ADVERTISING ART IN DIGITAL INDIA: THE ROLE OF AI AND NEW MEDIA (डिजिटल इंडिया में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला के अंतर्गत उपभोक्ता की सोच और मार्किट को प्रभावित करते रचनात्मक विज्ञापन : एआई और न्यू मीडिया की भूमिका)

Ravi Kant Pandey[a]*

[a] *Assistant Professor Applied Art, College of Arts and Crafts, Lucknow, Faculty of Fine Art, University of Lucknow*

[a]*Email: ravipandey9710@gmail.com*

Abstract

In the era of Digital India, modern and contemporary Indian advertising art is no longer limited to being merely a medium for product promotion; rather, it has evolved into a powerful creative expression that influences consumer thinking, behavior, and market trends. The widespread expansion of digital technologies, the internet, smartphones, and social media platforms has established Indian advertising within a new digital ecosystem, where Artificial Intelligence (AI) and new media have become central elements of the creative process.

This research paper analyzes how AI-based data analytics, algorithmic content, personalized advertising, and interactive new media platforms are influencing consumer psychology, interests, and purchasing decisions from a promotional perspective. AI-generated visuals, automated copywriting, motion graphics, augmented and virtual reality, and digital storytelling have made advertising more engaging, participatory, and experiential. Through these creative mediums, brands are establishing emotional connections with consumers, thereby giving new direction to market competition and brand identity.

The study also demonstrates that, under the influence of new media art, advertising is emerging as a contemporary art form in which a balanced integration of technology and aesthetics can be observed. In conclusion, this research establishes that AI and new media are highly significant for understanding the development of modern Indian advertising art in Digital India and its impact on consumers and the market.

डिजिटल इंडिया के युग में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला केवल उत्पाद प्रचार का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह उपभोक्ता की सोच, व्यवहार और बाजार की दिशा को प्रभावित करने वाली एक प्रभावशाली रचनात्मक अभिव्यक्ति बन चुकी है। डिजिटल तकनीकों, इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के व्यापक विस्तार ने भारतीय विज्ञापन को एक नए डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र डिजिटल इकोसिस्टम में स्थापित किया है, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और न्यू मीडिया रचनात्मक प्रक्रिया के केंद्रीय तत्व बन गए हैं।

यह शोध पत्र विश्लेषण करता है कि प्रचार की दृष्टि से किस प्रकार एआई आधारित डेटा एनालिटिक्स, एल्गोरिदमिक कंटेंट, पर्सनलाइज्ड विज्ञापन और इंटरैक्टिव न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म उपभोक्ता की मानसिकता, रुचियों और क्रय निर्णयों को प्रभावित कर रहे हैं। एआई जनित विजुअल्स, ऑटोमेटेड कॉपीराइटिंग, मोशन ग्राफिक्स, ऑगमेंटेड एवं वर्चुअल रियलिटी तथा डिजिटल स्टोरीटेलिंग ने विज्ञापन को अधिक आकर्षक, सहभागी और अनुभवात्मक बनाया है। इन रचनात्मक माध्यमों के माध्यम से ब्रांड उपभोक्ताओं के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित कर रहे हैं, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धा और ब्रांड पहचान को नई दिशा मिल रही है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि न्यू मीडिया आर्ट के प्रभाव से विज्ञापन एक समकालीन कला रूप के रूप में उभर रहा है, जहाँ तकनीक और सौंदर्यशास्त्र का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। निष्कर्षतः, यह शोध प्रमाणित करता है कि एआई और न्यू मीडिया डिजिटल इंडिया में आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला के विकास तथा उपभोक्ता और बाजार पर उसके प्रभाव को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

Keywords: Digital India, Modern Indian Advertising Art, Creative Advertising, Contemporary Advertising

डिजिटल इंडिया, आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला, रचनात्मक विज्ञापन, समकालीन विज्ञापन

---

* Corresponding author.

1. भूमिका

डिजिटल इंडिया के उदय के साथ भारतीय विज्ञापन उद्योग ने अभूतपूर्व परिवर्तन का अनुभव किया है। सूचना प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और मोबाइल इंटरनेट की व्यापक पहुँच ने विज्ञापन को पारंपरिक माध्यमों से आगे बढ़ाकर एक बहुस्तरीय, रचनात्मक और संवादात्मक कला में रूपांतरित कर दिया है। आज विज्ञापन केवल उत्पाद का परिचय नहीं देता, बल्कि उपभोक्ता के अनुभव, भावनाओं और सामाजिक पहचान को संबोधित करता है। समकालीन भारतीय विज्ञापन कला में तकनीकी नवाचार, सांस्कृतिक संदर्भ और रचनात्मक अभिव्यक्ति का समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

उदाहरणस्वरूप, अमूल की डिजिटल विज्ञापन श्रृंखला समसामयिक सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं पर आधारित रचनात्मक व्यंग्य प्रस्तुत करती है। यह विज्ञापन कला न केवल ब्रांड को प्रासंगिक बनाए रखती है, बल्कि उपभोक्ता के साथ बौद्धिक और सांस्कृतिक स्तर पर संवाद स्थापित करती है। इसी प्रकार तनिष्क के डिजिटल अभियानों ने सामाजिक समावेशन, अंतरधार्मिक विवाह और आधुनिक भारतीय स्त्री की स्वतंत्र पहचान को केंद्र में रखकर विज्ञापन को सामाजिक विमर्श का रूप दिया है। इससे स्पष्ट होता है कि समकालीन विज्ञापन केवल व्यावसायिक उद्देश्य तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बन रहा है।

इसके अतिरिक्त, केड़बरी डेयरी मिल्क ने अपने डिजिटल अभियानों में उत्सव, पारिवारिक संबंध और भावनात्मक निकटता को प्रमुखता दी है। त्योहारों और विशेष अवसरों पर प्रसारित इन अभियानों ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक प्रस्तुति शैली के साथ संयोजित किया है। इसी क्रम में छपाम के भारतीय डिजिटल अभियानों ने महिला सशक्तिकरण और आत्मविश्वास के संदेश के माध्यम से युवा वर्ग को प्रेरित किया है, जिससे विज्ञापन प्रेरणात्मक संचार का माध्यम बन गया है। न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने विज्ञापन को अधिक दृश्यात्मक, संक्षिप्त और प्रभावशाली बना दिया है। वीडियो-आधारित कंटेंट, रील्स, इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग और हैशटैग अभियानों के माध्यम से ब्रांड उपभोक्ताओं के दैनिक जीवन का हिस्सा बन रहे हैं। इस प्रकार विज्ञापन अब एकतरफा सूचना न होकर सहभागिता और अनुभव पर आधारित प्रक्रिया बन चुका है।

डिजिटल इंडिया के परिप्रेक्ष्य में यह परिवर्तन उपभोक्ता सोच को भी प्रभावित करता है। उपभोक्ता अब केवल उत्पाद की उपयोगिता नहीं, बल्कि उसके सामाजिक संदेश, नैतिकता और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को भी महत्व देता है। आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला इसी बदलती मानसिकता के अनुरूप विकसित हो रही है, जहाँ रचनात्मकता और सामाजिक चेतना का संतुलन आवश्यक हो गया है। अतः यह शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार समकालीन भारतीय विज्ञापन, न्यू मीडिया और तकनीकी नवाचार के माध्यम से उपभोक्ता की सोच, सामाजिक दृष्टिकोण और बाजार संरचना को प्रभावित कर रहा है।

डिजिटल युग में भारतीय विज्ञापन कला ने अभूतपूर्व परिवर्तन अनुभव किया है। यह परिवर्तन केवल माध्यमों का बदलाव नहीं है, बल्कि विचार, सौंदर्यबोध, तकनीकी संरचना और उपभोक्ता संबंधों की नई परिभाषा का संकेत है। डिजिटल इंडिया के अंतर्गत इंटरनेट की व्यापक पहुँच, स्मार्टफोन उपयोग, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का विस्तार तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित विश्लेषणात्मक प्रणालियों ने विज्ञापन को पारंपरिक प्रचार माध्यम से आगे बढ़ाकर एक इंटरैक्टिव, सहभागी और डेटा-आधारित रचनात्मक प्रक्रिया में रूपांतरित कर दिया है। आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला अब केवल सूचना नहीं देती, बल्कि अनुभव निर्मित करती है, भावनाएँ जगाती है और बाजार व्यवहार को दिशा देती है। इस भूमिका को बेहतर समझने के लिए इसे तीन प्रमुख उपशीर्षकों में विभाजित किया गया है-

1.1 पारंपरिक से डिजिटल तक विज्ञापन का ऐतिहासिक बदलाव

भारतीय विज्ञापन का आरंभ प्रिंट माध्यमों-पोस्टर, पत्र-पत्रिकाओं और होर्डिंग्स से हुआ। बाद में रेडियो और टेलीविजन ने जनसंचार की शक्ति को बढ़ाया। किंतु डिजिटल माध्यमों के आगमन के साथ विज्ञापन का चरित्र मूल रूप से बदल गया। मुख्य परिवर्तन इस प्रकार हैरू.

- एकतरफा संचार से संवादात्मक संचार की ओर परिवर्तन
- व्यापक जनसमूह से विशिष्ट लक्ष्य-समूह की ओर झुकाव
- स्थिर दृश्य से गतिशील और इंटरैक्टिव कंटेंट तक विकास
- समय-आधारित प्रसारण से ऑन-डिमांड और एल्गोरिदमिक वितरण प्रणाली तक विस्तार

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने उपभोक्ता को निष्क्रिय दर्शक से सक्रिय सहभागी में परिवर्तित कर दिया है

1.1.1 डिजिटल इंडिया और विज्ञापन का नया स्वरूप

डिजिटल इंडिया अभियान के बाद भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या, डिजिटल भुगतान, ई-कॉमर्स और सोशल मीडिया सहभागिता में तीव्र वृद्धि हुई। इससे विज्ञापन का एक नया डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हुआ।

- इस पारिस्थितिकी तंत्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं-
- डेटा-आधारित लक्ष्य निर्धारण
- व्यक्तिगत विज्ञापन
- सोशल मीडिया सहभागिता और इन्फ्लुएंसर संस्कृति
- वीडियो, रील्स, मीम और शॉर्ट-फॉर्म कंटेंट का वर्चस्व
- रियल-टाइम ब्रांड प्रतिक्रिया और ट्रेंड-आधारित रणनीति

अब विज्ञापन केवल उत्पाद बेचने का माध्यम नहीं, बल्कि डिजिटल पहचान और सामाजिक संवाद का हिस्सा बन गया है। ब्रांड अपनी उपस्थिति को सांस्कृतिक विमर्श, सामाजिक मुद्दों और डिजिटल समुदायों के माध्यम से स्थापित कर रहे हैं।

1.1.1.1 एआई और न्यू मीडियारू रचनात्मकता की पुनर्परिभाषा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और न्यू मीडिया तकनीकों ने विज्ञापन की रचनात्मक प्रक्रिया को नई दिशा दी है। मशीन लर्निंग, एल्गोरिदमिक कंटेंट, चैटबॉट्स, वर्चुअल इन्फ्लुएंसर्स और ऑटोमेटेड डिजाइन टूल्स विज्ञापन निर्माण को अधिक सटीक और प्रभावी बना रहे हैं।

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 41-46 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/YOJI2712

- एआई की भूमिका निम्न बिंदुओं में स्पष्ट होती है-
- उपभोक्ता व्यवहार का पूर्वानुमान
- कृत्रिम बुद्धिमता से कंटेंट निर्माण
- उपभोक्ता अनुभव का निजीकरण
- अभियान प्रदर्शन का त्वरित विश्लेषण
- इंटरैक्टिव और इमर्सिव विज्ञापन

इस प्रकार आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला में कला, तकनीक और बाजार का त्रिकोणीय संबंध स्थापित हो रहा है। यहाँ रचनात्मकता केवल सौंदर्यबोध नहीं, बल्कि रणनीतिक और तकनीकी दक्षता का परिणाम है। यही कारण है कि डिजिटल इंडिया के संदर्भ में विज्ञापन को समकालीन दृश्य संस्कृति और न्यू मीडिया कला का महत्वपूर्ण अंग माना जा सकता है।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य डिजिटल इंडिया के संदर्भ में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला के बदलते स्वरूप को गहराई से समझना और उसका अकादमिक विश्लेषण करना है। वर्तमान समय में विज्ञापन केवल बाजार आधारित गतिविधि न होकर एक सशक्त सांस्कृतिक, सामाजिक और रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में उभर रहा है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि किस प्रकार एआई और न्यू मीडिया आधारित रचनात्मक विज्ञापन भारतीय उपभोक्ता की सोच, व्यवहार और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित कर रहे हैं।

इस शोध का पहला उद्देश्य डिजिटल इंडिया के अंतर्गत भारतीय विज्ञापन कला के ऐतिहासिक विकास और उसके आधुनिक एवं समकालीन स्वरूप की पहचान करना है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि पारंपरिक विज्ञापन माध्यमों से डिजिटल प्लेटफॉर्म्स तक की यात्रा में विज्ञापन की दृश्य भाषा, रचनात्मक रणनीतियाँ और संचार शैली में क्या परिवर्तन आए हैं। दूसरा उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे सोशल मीडिया, डिजिटल वीडियो, मोबाइल एप्लिकेशन और इंटरैक्टिव मीडिया ने विज्ञापन को किस प्रकार अधिक सहभागी, संवादात्मक और अनुभवात्मक बनाया है।

शोध का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की भूमिका का अध्ययन करना है। इसमें यह समझना शामिल है कि डेटा एनालिटिक्स, मशीन लर्निंग, एल्गोरिदमिक कंटेंट और पर्सनलाइजेशन किस प्रकार उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण कर लक्षित और प्रभावी विज्ञापन तैयार करते हैं। इसके साथ ही यह भी अध्ययन किया गया है कि एआई आधारित स्वचालन ने विज्ञापन निर्माण, वितरण और मूल्यांकन की प्रक्रियाओं को किस तरह बदल दिया है।

3. साहित्य समीक्षा

डिजिटल मीडिया और विज्ञापन पर उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि तकनीकी नवाचारों ने विज्ञापन की प्रकृति को मूल रूप से बदल दिया है। प्रारंभिक अध्ययनों में पारंपरिक जनसंचार माध्यमों. प्रिंट, रेडियो और टेलीविजन के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया था, जहाँ विज्ञापन एकतरफा संचार का माध्यम था। किंतु इंटरनेट और सोशल मीडिया के आगमन के बाद विज्ञापन संवादात्मक और सहभागी बन गया।

कई विद्वानों ने यह स्पष्ट किया है कि सोशल मीडिया विज्ञापन उपभोक्ता सहभागिता, ब्रांड स्मरण और क्रय इच्छा को बढ़ाने में सहायक होते हैं। इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग पर किए गए अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर प्रस्तुत प्रामाणिक और रचनात्मक कंटेंट उपभोक्ताओं में अधिक विश्वास उत्पन्न करता है। भारतीय संदर्भ में यह भी देखा गया है कि स्थानीय भाषा, सांस्कृतिक प्रतीकों और सामाजिक मुद्दों से जुड़े विज्ञापन अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं।

एआई आधारित विज्ञापन पर केंद्रित साहित्य यह बताता है कि डेटा एनालिटिक्स, मशीन लर्निंग और एल्गोरिदमिक सिफारिश प्रणालियाँ उपभोक्ता व्यवहार को समझने और प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पर्सनलाइज्ड विज्ञापन, और वर्चुअल इन्फ्लुएंसर्स को समकालीन विज्ञापन संस्कृति का अभिन्न अंग माना गया है। न्यू मीडिया आर्ट और डिजिटल स्टोरीटेलिंग को विज्ञापन की रचनात्मक शक्ति के रूप में देखा गया है, जहाँ दृश्य कला, तकनीक और संचार का समन्वय होता है।

4. कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध "डिजिटल इंडिया में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला के अंतर्गत उपभोक्ता की सोच और मार्किट को प्रभावित करते रचनात्मक विज्ञापन - एआई और न्यू मीडिया की भूमिका" विषय के गहन अध्ययन हेतु एक सुव्यवस्थित, बहु-आयामी एवं अंतर्विषयी शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक है, जिसमें मिश्रित पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस पद्धति के अंतर्गत गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों का समन्वित विश्लेषण किया गया, ताकि विज्ञापन कला, तकनीकी नवाचार एवं उपभोक्ता व्यवहार के मध्य अंतर्संबंधों को समग्रता में समझा जा सके।

शोध की प्रारंभिक अवस्था में समस्या-निर्धारण के अंतर्गत यह प्रतिपादित किया गया कि डिजिटल इंडिया की पृष्ठभूमि में एआई-संचालित तथा न्यू मीडिया आधारित विज्ञापन किस प्रकार उपभोक्ता की वैचारिक संरचना, निर्णय-प्रक्रिया एवं बाजार की गतिशीलता को प्रभावित कर रहे हैं। इसके पश्चात् विस्तृत साहित्य समीक्षा के माध्यम से विज्ञापन कला के पारंपरिक सिद्धांतों, उपभोक्ता व्यवहार मॉडल, डिजिटल संचार सिद्धांत तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित विपणन रणनीतियों का अध्ययन किया गया, जिससे शोध का सैद्धांतिक ढाँचा निर्मित हुआ।

अनुसंधान के प्रायोगिक भाग में 2023-2026 की अवधि के प्रमुख डिजिटल विज्ञापन अभियानों का उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति द्वारा चयन किया गया। चयनित अभियानों में अमेज़न, प्राइम वीडियो तथा टाटा न्यू सम्मिलित हैं। इन अभियानों का चयन इस आधार पर किया गया कि ये एआई-आधारित पर्सनलाइजेशन, डेटा-संचालित रणनीति, सोशल मीडिया सहभागिता तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के प्रभावी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 41-46 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/YOJI2712

डेटा-संग्रहण की प्रक्रिया द्विस्तरीय रही। प्राथमिक आंकड़ों के अंतर्गत 18.45 वर्ष आयु वर्ग के 100 डिजिटल उपभोक्ताओं पर संरचित ऑनलाइन सर्वेक्षण संचालित किया गया, जिसमें विज्ञापन स्मरण, भावनात्मक प्रभा, तथा क्रय-निर्णय से संबंधित प्रश्न सम्मिलित थे। साथ ही, डिजिटल मार्केटिंग विशेषज्ञों एवं विज्ञापन डिजाइनरों के साक्षात्कार लिए गए, ताकि विज्ञापन निर्माण प्रक्रिया में एआई की भूमिका का व्यावहारिक दृष्टिकोण प्राप्त हो सके। द्वितीयक आंकड़ों के अंतर्गत उद्योग रिपोर्ट, डिजिटल विज्ञापन व्यय के सांख्यिकीय विवरण, सोशल मीडिया एनालिटिक्स तथा प्रकाशित शोध-पत्रों का अध्ययन किया गया।

अतः प्रस्तुत कार्यप्रणाली न केवल तकनीकी एवं कलात्मक आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण करती है, बल्कि विज्ञापन कला के समकालीन भारतीय परिदृश्य में डिजिटल नवाचार और उपभोक्ता मानस के मध्य अंतःक्रिया को वैज्ञानिक, संरचित एवं प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण से व्याख्यायित करने का प्रयास करती है।

क्रम संख्या	घटक	विवरण	प्रयुक्त साधनध्स्रोत	उद्देश्य
1	**शोध प्रकार**	मिश्रित पद्धति	गुणात्मक, मात्रात्मक, विश्लेषण	व्यापक एवं संतुलित परिणाम प्राप्त करना
2	शोध दृष्टिकोण	वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक	समकालीन विज्ञापन अभियानों का अध्ययन	विज्ञापन कला के प्रभाव का विश्लेषण
3	डेटा के स्रोत	प्राथमिक एवं द्वितीयक	शोध–पत्र, रिपोर्ट, डिजिटल प्लेटफॉर्म, उपभोक्ता प्रतिक्रिया	डेटा के स्रोत
4	प्राथमिक डेटा	सीमित सर्वेक्षणए साक्षात्कार	विज्ञापन विशेषज्ञ, डिजिटल उपभोक्ता	वास्तविक अनुभव और दृष्टिकोण प्राप्त करना
5	द्वितीयक डेटा	प्रकाशित लेख, सरकारी दस्तावेज, मार्केट रिपोर्ट	डिजिटल इंडिया दस्तावेज, उद्योग रिपोर्ट	सैद्धांतिक आधार मजबूत करना
6	नमूना चयन	उद्देश्यपूर्ण नमूना	डिजिटल विज्ञापन उपयोगकर्ता (18–45 वर्ष)	लक्ष्य समूह का प्रतिनिधित्व
7	डेटा विश्लेषण तकनीक	थीमैटिक एनालिसिस एवं सांख्यिकीय विश्लेषण	चार्ट, ग्राफ, प्रतिशत विश्लेषण	उपभोक्ता व्यवहार और मार्केट प्रभाव समझना
8	अध्ययन का क्षेत्र	भारतीय डिजिटल विज्ञापन उद्योग	सोशल मीडिया,, OTT, ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म	न्यू मीडिया की भूमिका का मूल्यांकन
9	अध्ययन अवधि	2023–2026	समकालीन विज्ञापन अभियान	वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण
10	सीमाएँ	सीमित सैंपल साइज, डिजिटल डेटा पर निर्भरता	ऑनलाइन प्रतिक्रिया आधारित विश्लेषण	निष्कर्षों की यथार्थता को स्पष्ट करना

5. केस अध्ययन एवं विश्लेषण

इस अध्ययन के अंतर्गत डिजिटल इंडिया के परिप्रेक्ष्य में उन विज्ञापन अभियानों का चयन किया गया, जिन्होंने न्यू मीडिया के माध्यम से उपभोक्ता की सोच, सामाजिक दृष्टिकोण और ब्रांड पहचान को प्रभावित किया। चयनित उदाहरणों में सर्फ एक्सेल, एरियल, डव तथा स्विगी के डिजिटल अभियान शामिल हैं।

5.1. सर्फ एक्सेल : "दाग अच्छे हैं" और सामाजिक सह-अस्तित्व

सर्फ एक्सेल का डिजिटल अभियान "दाग अच्छे हैं" भारतीय विज्ञापन इतिहास में एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। विशेष रूप से होली और अन्य त्योहारों के अवसर पर प्रसारित अभियानों में बच्चों की मासूमियत, धार्मिक सद्भाव और सह-अस्तित्व का संदेश प्रस्तुत किया गया।

विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि विज्ञापन ने उत्पाद की कार्यक्षमता को सीधे प्रस्तुत करने के बजाय सामाजिक मूल्यों को केंद्र में रखा। इससे ब्रांड ने स्वयं को केवल डिटर्जेंट के रूप में नहीं, बल्कि संवेदनशील और प्रगतिशील सामाजिक पहचान वाले ब्रांड के रूप में स्थापित किया। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इस अभियान को व्यापक चर्चा और भावनात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई, जिसने ब्रांड की विश्वसनीयता को सुदृढ़ किया।

5.2. एरियल : बोझ बाँटें और लैंगिक समानता

एरियल : बोझ बाँटें अभियान भारतीय समाज में लैंगिक असमानता के मुद्दे को संबोधित करता है। डिजिटल वीडियो विज्ञापनों में घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी साझा करने का संदेश दिया गया। यह अभियान पारंपरिक भूमिका-धारणाओं को चुनौती देता है और आधुनिक भारतीय परिवार की बदलती मानसिकता को दर्शाता है। विश्लेषण से यह पाया गया कि इस अभियान ने उपभोक्ता के दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव डाला। ब्रांड को सामाजिक जिम्मेदारी निभाने वाले प्रगतिशील ब्रांड के रूप में देखा जाने लगा। यह केस यह दर्शाता है कि आधुनिक डिजिटल विज्ञापन केवल उत्पाद लाभ पर नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना पर भी आधारित है।

5.3. Dove : असली खूबसूरती और आत्म-स्वीकृति

Dove : असली खूबसूरती अभियान ने पारंपरिक सौंदर्य मानकों को चुनौती देते महिलाओं को विज्ञापन में स्थान दिया। डिजिटल माध्यमों पर यह अभियान व्यापक रूप से साझा और चर्चित हुआ।

विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि इस अभियान ने आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति जैसे मनोवैज्ञानिक आयामों को संबोधित किया। उपभोक्ताओं ने ब्रांड को अधिक प्रामाणिक और संवेदनशील माना। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि समकालीन विज्ञापन कला में पहचान निर्माण और मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 41-46 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/YOJI2712

5.4. स्विगी : त्वरित संचार और शहरी युवा संस्कृति

स्विगी के डिजिटल अभियानों में हास्य, तात्कालिक प्रतिक्रिया और शहरी जीवनशैली को दर्शाया जाता है। सोशल मीडिया पर छोटे, प्रभावशाली और ट्रेंड-आधारित पोस्ट के माध्यम से ब्रांड युवा उपभोक्ताओं से जुड़ता है। विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि स्विगी की विज्ञापन रणनीति में भाषा की सरलता, और डिजिटल गति का समन्वय है। इससे ब्रांड की छवि आधुनिक, सहज और मित्रवत बनी है।

यह केस यह दर्शाता है कि न्यू मीडिया में समयबद्धता और सांस्कृतिक अनुकूलन विज्ञापन की सफलता के प्रमुख कारक हैं।

6. परिणाम एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन में डिजिटल इंडिया के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला के अंतर्गत रचनात्मक विज्ञापनों के उपभोक्ता सोच और बाजार संरचना पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया। प्राथमिक सर्वेक्षण, फोकस ग्रुप चर्चा, डिजिटल कंटेंट विश्लेषण तथा चयनित केस अध्ययनों के माध्यम से प्राप्त परिणामों ने यह संकेत दिया कि आज का डिजिटल विज्ञापन केवल सूचना प्रसारण का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और भावनात्मक अनुभव का सृजनकर्ता बन चुका है।

6.1 रचनात्मकता और भावनात्मक अपील का प्रभाव

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि जिन विज्ञापनों में कथात्मक शैली, प्रतीकात्मक दृश्य संरचना और सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश था, वे उपभोक्ता के मन पर अधिक स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। उदाहरणस्वरूप, अमेज़न, प्राइम वीडियो के अभियानों में क्षेत्रीय कथाओं और पारिवारिक भावनाओं को केंद्र में रखकर प्रस्तुत किए गए विज्ञापन दर्शकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करने में सफल रहे।

उपभोक्ताओं ने ऐसे विज्ञापनों को “संबंधित” और “विश्वसनीय” बताया। इससे यह सिद्ध होता है कि आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला में भावनात्मक अपील, उपभोक्ता की पहचान और सामाजिक संदर्भ के साथ जुड़कर कार्य करती है।

6.1.1 न्यू मीडिया और संवादात्मकता

न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब और ट्विटर (x) ने विज्ञापन को एकतरफा संचार से बहु-दिशात्मक संवाद में परिवर्तित कर दिया है। अध्ययन में पाया गया कि जिन अभियानों में उपभोक्ता की भागीदारी शामिल थी, वे अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए।

उदाहरणस्वरूपए ज़ोमैटो ने अपने सोशल मीडिया अभियानों में समसामयिक घटनाओं, हास्य और शहरी भाषा का प्रयोग कर युवा वर्ग के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित किया। इससे ब्रांड की पहचान एक “मित्रवत” और “आधुनिक” संस्था के रूप में विकसित हुई।

यह परिणाम यह दर्शाता है कि डिजिटल युग में विज्ञापन अब केवल उत्पाद की प्रस्तुति नहीं, बल्कि सामाजिक सहभागिता का माध्यम है।

6.1.1.1 सांस्कृतिक अनुकूलन और स्थानीयता

भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक विविधता एक महत्वपूर्ण कारक है। अध्ययन में पाया गया कि क्षेत्रीय भाषाओं, त्योहारों और पारंपरिक प्रतीकों का उपयोग करने वाले विज्ञापन अधिक प्रभावी होते हैं।

टाटा न्यू जैसे अभियानों में भारतीय परिवार, त्योहारों और सामूहिक उपभोग की संस्कृति को दर्शाया गया, जिससे विज्ञापन केवल आर्थिक गतिविधि न होकर सांस्कृतिक अनुभव बन गया।

यह स्पष्ट करता है कि तकनीकी माध्यमों में प्रस्तुत विज्ञापन तभी सफल होते हैं जब वे स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनशीलता के साथ निर्मित हों।

6.1.1.1.1 उपभोक्ता मनोविज्ञान पर प्रभाव

सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि डिजिटल विज्ञापन उपभोक्ता के निर्णय-निर्माण से पहले उसकी धारणा और दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। दृश्य-श्रव्य प्रभाव, संगीत, रंग-संयोजन और प्रतीकों का प्रयोग उपभोक्ता की स्मृति में दीर्घकालिक छाप छोड़ता है। ।प्क्। मॉडल के संदर्भ में यह पाया गया कि डिजिटल विज्ञापन “Perception” और “Attitude” चरणों में अत्यंत प्रभावी हैं। रचनात्मक प्रस्तुति उपभोक्ता को आकर्षित करती है, जबकि कथात्मक तत्व उसकी रुचि को बनाए रखते हैं।इस प्रकार परिणाम संकेत देते हैं कि आधुनिक विज्ञापन कला मनोवैज्ञानिक स्तर पर उपभोक्ता के भावनात्मक और सामाजिक आयामों को सक्रिय करती है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि डिजिटल विज्ञापन बाजार की प्रतिस्पर्धा को अधिक गतिशील बनाते हैं। छोटे और मध्यम उद्यम भी न्यू मीडिया के माध्यम से व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच सकते हैं। इससे बाजार में लोकतांत्रिकता बढ़ी है। साथ ही, उपभोक्ता अब अधिक जागरूक और चयनात्मक हो गया है। वह केवल आकर्षक दृश्य से प्रभावित नहीं होता, बल्कि ब्रांड की सामाजिक जिम्मेदारी, नैतिकता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को भी महत्व देता है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि डिजिटल इंडिया के संदर्भ में विज्ञापन केवल विपणन रणनीति नहीं, बल्कि सामाजिक विमर्श का हिस्सा बन चुका है।

7. मुख्य निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्षित हुआ कि डिजिटल इंडिया के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला उपभोक्ता सोच और बाजार संरचना को गहराई से प्रभावित कर रही है। सर्वेक्षण, कंटेंट विश्लेषण एवं केस अध्ययन के आधार पर यह पाया गया कि रचनात्मकता डिजिटल विज्ञापन की केंद्रीय शक्ति है, जो उपभोक्ता का ध्यान आकर्षित करने के साथ-साथ भावनात्मक जुड़ाव भी स्थापित करती है। कथात्मक शैली, सांस्कृतिक प्रतीकों, स्थानीय भाषाओं और समसामयिक सामाजिक संदर्भों का प्रयोग विज्ञापन को अधिक प्रासंगिक और विश्वसनीय बनाता है। न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म ने विज्ञापन को एकतरफा संदेश से आगे बढ़ाकर संवादात्मक प्रक्रिया में परिवर्तित कर दिया है, जिससे उपभोक्ता सक्रिय सहभागी की भूमिका निभाने लगा है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि दृश्य-श्रव्य प्रभाव, रंग-संयोजन, संगीत और प्रतीकात्मक प्रस्तुति उपभोक्ता की स्मृति और दृष्टिकोण पर स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। साथ ही, डिजिटल मंचों ने छोटे एवं मध्यम उद्यमों को भी व्यापक बाजार तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया है, जिससे बाजार संरचना अधिक प्रतिस्पर्धात्मक और लोकतांत्रिक बनी है। समग्रतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला तकनीक, मनोविज्ञान और सांस्कृतिक संवेदनशीलता के समन्वय के माध्यम से उपभोक्ता के व्यवहार, धारणा और बाजार प्रवृत्तियों को प्रभावी रूप से रूपांतरित कर रही है।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 41-46 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/YOJI2712

8. निष्कर्ष

डिजिटल इंडिया के युग में आधुनिक एवं समकालीन भारतीय विज्ञापन कला ने एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विज्ञापन अब केवल उत्पाद या सेवा की सूचना देने का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और तकनीकी संचार प्रणाली के रूप में विकसित हो चुका है। न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म के विस्तार ने विज्ञापन को बहुआयामी, संवादात्मक और सहभागी स्वरूप प्रदान किया है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता निष्क्रिय दर्शक से सक्रिय सहभागी में परिवर्तित हुआ है।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह सिद्ध हुआ कि रचनात्मकता आधुनिक विज्ञापन कला का केंद्रीय तत्व है। कथात्मक शैली, दृश्य-श्रव्य प्रभाव, प्रतीकात्मक संरचना, स्थानीय भाषाओं और सांस्कृतिक संकेतों का प्रयोग उपभोक्ता के साथ गहरे भावनात्मक संबंध स्थापित करता है। डिजिटल मंचों पर प्रस्तुत विज्ञापन सामाजिक विमर्श, सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक अनुभवों को भी अभिव्यक्त करते हैं। इस प्रकार विज्ञापन केवल आर्थिक गतिविधि न होकर सामाजिक संरचना का भी अभिन्न अंग बन गया है।

साथ ही, डिजिटल प्लेटफॉर्म ने बाजार संरचना को अधिक गतिशील और प्रतिस्पर्धात्मक बनाया है। छोटे एवं मध्यम उद्यमों को भी व्यापक उपभोक्ता वर्ग तक पहुँचने का अवसर प्राप्त हुआ है, जिससे बाजार संचार का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ है। उपभोक्ता अब अधिक जागरूक, विश्लेषणात्मक और चयनात्मक हो गया है, जो केवल आकर्षक प्रस्तुति से प्रभावित नहीं होता, बल्कि ब्रांड की विश्वसनीयता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को भी महत्व देता है।

समग्रतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल इंडिया के संदर्भ में आधुनिक भारतीय विज्ञापन कला तकनीकी नवाचार, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक संवेदनशीलता के संतुलित समन्वय से उपभोक्ता की सोच, दृष्टिकोण और बाजार व्यवहार को प्रभावी रूप से रूपांतरित कर रही है। भविष्य में यह आवश्यक होगा कि विज्ञापन रणनीतियाँ नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक विविधता को केंद्र में रखकर विकसित की जाएँ, ताकि डिजिटल युग में विज्ञापन कला केवल विपणन उपकरण न रहकर सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बन सके।

References

1. Dr. Vijay Phalke, December : 2023, IMPACT OF AI IN DIGITAL MARKETING IN INDIA, SOUTH INDIA JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES, ISSN: 0972 – 8945
2. Shivani Patel* and Metu Dada, September 29, 2025, The Impact of AI-Generated Advertising and Virtual Influencers on Consumer Perception and Brand Authenticity, Journal of Media & Management
3. Mr. A. Praveen kumar, 8 August 2025, Dr. V. Kavitha, Analysis of Digital marketing in India and the impact of AI on ecommerce, International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)
4. Dr. Swati Patil, Sept. 21, 2025, The Impact of AI-Powered Influencer Marketing on Consumer Engagement and Purchase Intent: An Indian Perspective, Advances in Consumer Research, Issue 4 : 4131-4148
5. Pramod kumar, January 2026, Digital Marketing and Technology: Transforming Consumer Engagement in India, International Journal Of Innovative Research In Technology,
6. Arun Kumar, Dr. Mrinalini Pandey, Abhishek Kumar, Vol 4 Issue 1 (2024), Determinants of Consumers' Attitudes Towards AI-Enabled Advertising Over Social Media in Indian Context: Applying and Extending the Technology Acceptance Model, Journal of Informatics Education and Research
7. Dr. Pragati Bhati1, Dr. Junaid Hushain, 18 feb. 2025, The Impact of Animated Advertisements on Consumer Engagement in the Digital Age, Journal of Information Systems Engineering and Management
8. Biao Gao, Yiming Wang, November 30, 2023, Artificial Intelligence in Advertising: Advancements, Challenges, and Ethical Considerations in Targeting, Personalization, Content Creation, and Ad Optimization, https://doi.org/10.1177/21582440231210759
9. Miss. Himani Devi1,Dr.Amit Kumar Uniyal, 18 Dec.. 2024, The Impact of AI-Driven Social Media Advertising on Consumer Purchasing Decision, Journal of Information Systems Engineering and Management
10. Chenyan Gu, Shuyue Jia, 3 September 2024, Exploring Consumer Acceptance of AI-Generated Advertisements: From the Perspectives of Perceived Eeriness and Perceived Intelligence, https://doi.org/10.3390/jtaer19030108

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 47-52 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/MWXM1054

RELATIONAL AESTHETICS AND THE TRANSFORMATION OF ARTISTIC EXPERIENCE IN CONTEMPORARY ART

Ajay Patel[a]*

[a] *Research Scholar, Department of Fine Art, Faculty of Arts, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satna, M.P.*

[a] *Email: akpatel.4596@gmail.com*

Abstract

Relational Aesthetics, developed by Nicolas Bourriand in the later part of twentieth century, signifies a turning point away from object-oriented production towards the generation of inter-human relations as forms of art work. This is a work that engages critically with relational aesthetics as theoretical framework and as artistic practice in contemporary art. According to this book, relational art—whose roots are planted in the theory and practice of French critic and theorist Nicolas Bourriaud—transforms an artwork's form, authorship, and audience bygit drawing on aspects of non-object-based visual art (conceptual art) as well as acentric discursive relationships. Setting Bourriaud's notion in its broader philosophical, sociological and art-historical context, the article examines how relational aesthetics reflects the condition of late capitalism, globalization, and social life recast as a commodity. Using case studies of specific works and widespread discussions around the work, the project shows how relational artworks collaborate as social interstices or zones in which to encounter art temporarily, challenging hegemonic culture and dominant economic models. In the face of important criticisms of relational aesthetics as formulating a useful politics, however, I suggest that its importance is better understood in terms of micro-political relations and ethical experience than grand metanarrative. Finally, my research places relational aesthetics as a fundamental paradigm for comprehending the shifting relationship between contemporary art and society, perception and collective sense-making.

Keywords: Relational Aesthetics, Contemporary Art; Social Interaction, Viewer Engagement, Artistic Encounter, Social Interstices, Participatory Art Practices

---

* Corresponding author.

1. INTRODUCTION

In current art practices from the end of the twentieth century, traditional aesthetic frameworks have been increasingly applied to scrutiny in relation to modernist aesthetics of autonomy, originality and formal purity. With the increasing involvement of artistic creation in social, political and economic conditions, this traditional concept of art as a self-contained object was no longer able to accommodate newly situated practices. In this respect, Bourriaud's Relational Aesthetics was 'a critical reorientation' that took human social interactions and social-exchanges as a site of art meaning.

Relational aesthetics arose in the 1990s, a moment of rapid change as the world became more global and digital and every aspect of daily life became increasingly commercialized. Instead of objects of art, they made situations, encounters and participatory environments that explicitly focused on interaction and shared experience. Bourriaud claimed that these activities were just a symptom of an overall cultural situation characterized by human relations more and more being mediated, factioned apart and controlled by the laws of accumulation. Art becomes in this context a device that allows for the reconfiguration of sociality, and to figure out alternative modes of cohabitation.

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 47-52 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/MWXM1054

This article seeks to critically evaluate relational aesthetics as an overarching model of contemporary art making. It considers how relations perform between traditional dichotomies of artist and viewer, art work and audience, form and content. In addition, the research positions relational aesthetics in relation to philosophical discussions of materialism, encounter and social space that opens up relations between aesthetic theory and lived experience. In examining the theory and politics of relational aesthetics as art practices that have demanded attention in recent years, the article explores its pertinence, constraints and subversive possibilities in contemporary visual culture.

2. CONCEPTUAL FOUNDATIONS AND THEORETICAL FRAMEWORK

Relational aesthetics is a significant concept in contemporary art that shifts the focus from autonomous art objects to human relationships and social interaction. Proposed by Nicolas Bourriaud, this theory argues that the primary role of contemporary art is no longer the production of objects such as paintings or sculptures, but the creation of situations that encourage interaction, dialogue, and shared experience. Within this framework, art functions as a social space in which meaning emerges through communication rather than visual form alone.

This approach marks a clear departure from modernist aesthetics, which emphasized formal qualities, stylistic innovation, and the artist’s individual expression. In modernist art, meaning was largely embedded in the material form and visual structure of the artwork. Relational aesthetics, by contrast, locates meaning in the interactions that occur among participants. Art is thus understood as an event or process that unfolds between people rather than a fixed object intended solely for contemplation.

A central idea in relational aesthetics is the concept of the “encounter.” Bourriaud suggests that artistic form is not static or predetermined but is generated through human interaction. Activities such as conversation, shared meals, play, or collaboration become integral to the artwork itself. Meaning is produced collectively, and the artist relinquishes complete control over interpretation as participants actively shape the work through engagement.

Bourriaud also introduces the notion of “social interstices,” referring to temporary social spaces created by relational artworks that exist outside dominant systems such as the market, institutional structures, or rigid social norms. These spaces enable alternative modes of interaction and momentary experiences of community.

Rather than rejecting artistic form, relational aesthetics expands its definition to include human behavior, communication, time, and lived experience. The artwork becomes an open-ended process, redefining the roles of artist and viewer as facilitator and active participant, a concept that resonates with Umberto Eco’s idea of the “open work” through direct social engagement.

Artists such as Shilpa Gupta exemplify this approach through works that involve cooking and sharing food within gallery spaces, transforming exhibitions into sites of social exchange. Similarly, Sheela Gowda’s interventions in everyday environments heighten awareness of participation and presence. Ultimately, relational aesthetics challenges the commodification of art by prioritizing temporary human relationships, physical presence, and collective experience, proposing art as a social and ethical practice in contemporary society.

3. RELATIONAL AESTHETICS, POLITICS, AND CRITICAL DEBATES

Although relational aesthetics has become an important idea in contemporary art, it has also faced strong criticism, especially regarding its political role. Many critics question whether relational art truly creates social change or simply offers pleasant experiences without addressing deeper social problems.

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

Art historian Claire Bishop is one of the most well-known critics of relational aesthetics. She argues that relational art often focuses too much on harmony, friendliness, and cooperation, while ignoring conflict, disagreement, and power differences that naturally exist in society. According to Bishop, these artworks may create small, comfortable social groups that feel inclusive but do not challenge real inequalities such as class, race, or economic power. In this way, relational aesthetics can unintentionally reflect neoliberal ideas, where participation is encouraged but real political change is avoided.

Bishop also points out that participation alone does not automatically lead to freedom or empowerment. Drawing from political theorist Chantal Mouffe, she stresses that disagreement and tension are essential parts of a healthy democratic society. From this viewpoint, relational artworks that emphasize pleasant social interaction may silence critical voices and differences. Bishop describes this tendency as a "feel-good" form of social art that avoids uncomfortable questions.

In response to these criticisms, Nicolas Bourriaud defends relational aesthetics by explaining that it works on a small, everyday level rather than through large political movements. He argues that relational art is not meant to directly confront governments or institutions. Instead, its political value lies in changing how people relate to one another in daily life. By creating situations based on sharing, cooperation, and dialogue, relational art quietly questions the market-driven and impersonal nature of modern society.

Relational aesthetics should also be understood within the context of today's world, where grand political ideals and utopian visions are less common. Unlike early modern art movements that aimed to transform society completely, contemporary artists often work in fragmented and diverse social conditions. As a result, relational artworks offer temporary and localized moments of resistance rather than permanent solutions.

Overall, the debate around relational aesthetics highlights a tension between ethics and politics in contemporary art. While relational art may not openly challenge power structures, it raises important ethical questions about care, responsibility, and living together. In an age marked by social isolation, digital communication, and shrinking public spaces, relational aesthetics provides meaningful opportunities for real human connection and reflection on social relationships.

4. CASE STUDIES OF RELATIONAL APPROACHES IN INDIAN CONTEMPORARY ART

Relational aesthetics, as articulated by Nicolas Bourriaud, provides a productive framework for examining contemporary Indian art practices that prioritize interaction, sensory engagement, and social experience over autonomous art objects. In the Indian context, relational practices often emerge through embodied perception, collective memory, material symbolism, and ethical engagement with socio-political realities. Rather than replicating Western models of conviviality, Indian artists adapt relational aesthetics to local conditions shaped by history, belief systems, technological mediation, and lived social complexity. The following case studies by Farah Mulla, Shilpa Gupta, and Sheela Gowda demonstrate how relational aesthetics operates in Indian contemporary art through participatory sound, political listening, and material-spatial encounter.

4.1 Farah Mulla: *AEON (2)*, 2019

Farah Mulla's multimedia practice exemplifies relational aesthetics through sensory participation and embodied interaction. Trained in science and working across sound, sculpture, and technology, Farah investigates how human perception—particularly auditory perception—shapes subjective experience in an increasingly technologized world. Her work *AEON (2)* (2019), composed of carved stone integrated with sensor circuits and sound, resists conventional objecthood by existing primarily as an experiential encounter.

The artwork remains inactive until activated by the viewer. Audience interaction triggers sound, transforming the sculpture into a responsive system. In this process, the viewer becomes a co-producer of meaning, aligning directly with Bourriaud's claim that relational art is completed through participation rather than contemplation. The sculptural form functions less as a visual object and more as a relational interface through which sound, memory, and bodily presence converge.

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 47-52 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/MWXM1054

AEON (2) creates what Bourriaud terms a social interstice—a temporary space of encounter situated outside conventional modes of consumption. The sound produced is not standardized or repeatable; instead, it becomes a personal and momentary experience shaped by the viewer's movement and attention. These auditory interactions generate what Mulla describes as "memory capsules," reinforcing the idea that relational art operates through time-based, lived experience rather than permanent form.

Although technology is embedded in the work, it does not replace human presence. Instead, it heightens sensory awareness and reinforces the necessity of embodied engagement. In an era dominated by virtual communication and algorithmic interaction, *AEON (2)* offers a counter-model grounded in physical presence, attentiveness, and perceptual intimacy. The work thus reflects the ethical dimension of relational aesthetics, emphasizing care, responsiveness, and human agency within technological systems.

Figure 1. AEON (2) 2019, Carved stone integrated with sensor circuit and sound Varied

4.2 Shilpa Gupta: *For, In Your Tongue, I Cannot Fit*, 2017–18

Shilpa Gupta's large-scale sound installation *For, In Your Tongue, I Cannot Fit* presents a politically charged articulation of relational aesthetics rooted in listening, collective memory, and ethical responsibility. The work consists of one hundred suspended microphones, each reciting verses by poets who were imprisoned or censored for their beliefs across diverse historical and geographical contexts. As viewers move through the installation, they are immersed in a shifting polyphonic soundscape shaped by proximity and duration.

Relationally, the work transforms the viewer into an active participant within a shared auditory space. Meaning does not emerge instantly but unfolds through sustained listening, aligning with Bourriaud's emphasis on shared time as a central component of relational art. The installation produces a collective encounter in which voices from different cultures and centuries coexist, generating a relational field of solidarity, remembrance, and resistance.

Figure 2. Shilpa Gupta, For, In Your Tongue, I Cannot Fit, 2017-18, Collection museum Voorlinden.

Unlike convivial relational practices that emphasize harmony, Gupta's work introduces tension, discomfort, and political awareness into the relational encounter. The act of listening becomes an ethical gesture, implicating the viewer in histories of censorship, confinement, and silencing. In this sense, the work directly responds to critiques of relational aesthetics by demonstrating that participation can be critical rather than merely celebratory.

The installation also functions as a social interstice by temporarily suspending dominant narratives of power and authority. Microphones—typically associated with amplification and control—are repurposed to transmit marginalized voices, challenging institutional modes of communication. Gupta's relational strategy operates at a micro-political level, reshaping perception and ethical awareness rather than delivering overt political messaging. Through embodied listening and spatial immersion, spectatorship is redefined as responsibility, aligning with the paper's emphasis on experiential ethics.

4.3 Sheela Gowda: *Behold*, 2009

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

Sheela Gowda's installation *Behold*, created for the Venice Biennale, offers a materially grounded and spatially immersive interpretation of relational aesthetics. Constructed from thousands of hair ropes—each made from human hair collected from diverse individuals—and suspended steel car bumpers, the work creates a monumental environment emphasizing tension, vulnerability, and collective presence.

Although *Behold* does not involve direct participation, it engages relational aesthetics through bodily encounter and spatial awareness. Meaning emerges through the viewer's movement, proximity, and sensory response to scale and material contrast. The work establishes relationships between organic and industrial materials, individual bodies and collective labor, and belief systems and modern infrastructures.

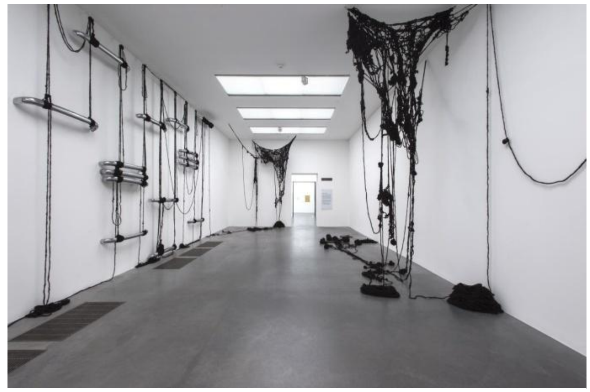

Figure 3. 'Behold' [2009] by Sheela Gowda

The hair rope is a profoundly relational material. Composed of hair from anonymous individuals across gender, age, and community, it embodies collective human presence and cultural belief. By aggregating thousands of such ropes, Gowda transforms individual traces into a shared material condition, aligning with relational aesthetics' emphasis on inter-human connection.

Behold also functions as a social interstice by creating a space where viewers confront bodily fragility in relation to mass, weight, and suspension. Resisting spectacle, the installation fosters sensory awareness and contemplation. Meaning arises through experience rather than representation, reinforcing the ethical force of relationality through material memory and spatial tension.

Together, these case studies demonstrate how relational aesthetics manifests in Indian contemporary art through diverse strategies—sensory activation, political listening, and material-spatial encounter. While differing in form and intent, all three works shift focus from art as object to art as experience shaped by presence, participation, and shared meaning. In the Indian context, relational aesthetics emerges not as a borrowed theory but as a flexible framework capable of addressing local conditions of belief, resistance, materiality, and community.

5. Critical Synthesis: Relational Aesthetics and Contemporary Visual Culture

Relational aesthetics should be understood in relation to the major changes taking place in contemporary visual culture. Today, digital technology, social media, and online communication strongly shape how people connect with one another. While these technologies allow constant virtual interaction, they often reduce direct human contact. Relational aesthetics offers an alternative by emphasizing physical presence, face-to-face interaction, and shared time. It reminds us of the value of real human encounters in an increasingly virtual world.

This focus on lived experience connects relational aesthetics with phenomenological approaches to art, which stress perception, emotion, and personal experience. In relational art, the artwork is not an object to be observed from a distance. Instead, it becomes a space of interaction where meaning is created through participation. Viewers are encouraged to think about their own role within social relationships and systems. Rather than representing social life, relational art actively creates social situations and experiences. However, relational aesthetics also raises important questions when such artworks are presented within institutions like museums, galleries, and international exhibitions. These spaces are shaped by power structures, access, and cultural privilege. Critics argue that when participatory artworks are displayed in such settings, they risk turning social interaction into a kind of performance or spectacle. In these cases, participation may look inclusive but may not truly challenge existing hierarchies or exclusions. This makes it necessary to examine carefully the conditions in which relational art is produced and shown.

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 47-52 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI :10.67073/MWXM1054

Despite these limitations, relational aesthetics remains a useful way to understand the ethical direction of contemporary art. By focusing on dialogue, sharing, and collective engagement, relational practices highlight values such as care, responsibility, and coexistence. They encourage viewers to think about meaning not as something created alone, but through relationships with others.

In the context of late capitalism, where human relationships are often treated as commodities, relational aesthetics offers alternative ways of connecting. These moments may be temporary and fragile, but they are important because they allow people to imagine more humane and meaningful forms of social interaction.

Conclusion

This research has examined relational aesthetics as a transformative framework in contemporary art that shifts artistic meaning from autonomous objects to inter-human relations. Drawing on Nicolas Bourriaud's theory, the study demonstrates how relational art redefines artistic form, authorship, and spectatorship by prioritizing participation, encounter, and shared time. Art is understood not as a fixed visual product but as a process that unfolds through social interaction and lived experience.

The paper has also addressed major critical debates surrounding relational aesthetics, particularly concerns about its political effectiveness. While relational art may not directly confront structural power or ideology, this research argues that its significance lies in micro-political engagement and experiential ethics. By fostering dialogue, listening, and attentiveness, relational practices subtly challenge the commodification of social life and encourage alternative modes of coexistence.

The analysis of Indian contemporary art practices by Farah Mulla, Shilpa Gupta, and Sheela Gowda demonstrates how relational aesthetics is meaningfully adapted to local contexts. These artists employ sensory participation, ethical listening, and material-spatial encounter to address issues of technology, censorship, belief, and collective memory. In this way, relational aesthetics emerges not as a borrowed Western model but as a flexible framework responsive to India's social and cultural realities.

Ultimately, relational aesthetics affirms art's capacity to generate shared meaning and ethical reflection in an increasingly fragmented contemporary world.

References

1. Bourriaud, N. (2002). *Relational aesthetics* (S. Pleasance & F. Woods, Trans.). Dijon: Les Presses du Réel. (Original work published 1998)
2. Bourriaud, N. (2009). *The radicant*. New York, NY: Lukas & Sternberg.
3. Althusser, L. (2006). *Philosophy of the encounter: Later writings, 1978–87* (G. M. Goshgarian, Trans.). London: Verso.
4. Bishop, C. (2006). The social turn: Collaboration and its discontents. *Artforum*, 44(6), 178–183.
5. Eco, U. (1989). *The open work* (A. Cancogni, Trans.). Cambridge, MA: Harvard University Press. (Original work published 1962)
6. Tiravanija, R. (1995). *Untitled (Free)*. Exhibition documentation. New York: 303 Gallery.
7. Bourriaud, N. (1999). *Esthétique relationnelle*. Dijon: Les Presses du Réel.
8. Bishop, C. (2012). *Artificial hells: Participatory art and the politics of spectatorship*. London: Verso.
9. Mouffe, C. (2005). *On the political*. London: Routledge.
10. Foster, H. (1996). *The return of the real: The avant-garde at the end of the century*. Cambridge, MA: MIT Press.
11. Parreno, P., & Huyghe, P. (2003). *No ghosts just a shell*. Cologne: Walther König.
12. Orozco, G. (2004). *Gabriel Orozco*. New York, NY: Museum of Modern Art.
13. Haaning, J. (2000). *Turkish jokes*. Public art project documentation. Copenhagen.
14. Kester, G. H. (2004). *Conversation pieces: Community and communication in modern art*. Berkeley, CA: University of California Press.

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

PLURALISM, CONTINUITY, AND GLOBAL DIALOGUES IN INDIAN ART (**भारतीय कला में विविधता, निरंतरता और वैश्विक संवाद**)

Nitin Gupta [a]*

[a]assistant Professor, School Of Creative And Performing Arts, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
[a]Email: n.r.murlidhar@gmail.com

Abstract

Indian art stands as one of the world's most ancient, continuous, and multifaceted artistic traditions. Its distinctiveness lies in its plurality, cultural depth, and inherent capacity to transform itself over time. This research paper presents a historical, cultural, and comparative analysis of three central concepts of Indian art: diversity, continuity, and global dialogue.

Ranging from prehistoric rock paintings to the contemporary global art stage, Indian art has not only expressed itself within diverse religious, social, political, and philosophical contexts but has also utilized the medium of art to articulate contemporary themes, shifting circumstances, and human emotions. This study endeavors to establish that, within the realm of Indian art, change and tradition are not mutually contradictory but, rather, complementary elements.

भारतीय कला विश्व की सबसे प्राचीन, निरंतर और बहुआयामी कलात्मक परंपराओं में से एक है। इसकी विशेषता इसकी बहुलता, सांस्कृतिक गहराई और समय के साथ स्वयं को रूपांतरित करने की क्षमता में निहित है। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय कला की तीन केंद्रीय अवधारणाओं—विविधता, निरंतरता, और वैश्विक संवाद—का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से लेकर समकालीन वैश्विक कला मंच तक भारतीय कला ने विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक संदर्भों में स्वयं को न ही अभिव्यक्त किया, बल्कि कला के द्वारा समसामयिक विषयों,बदलती परिस्थितियों, भावनाओं को भी व्यक्त किया है। इस शोध में यह स्थापित करने का प्रयास किया गया है कि भारतीय कला में परिवर्तन और परंपरा परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि समपूरक तत्व हैं।

Keywords: Indian art, artistic, traditions, contemporary global art

भारतीय कला, कलात्मक, परंपरा, समकालीन वैश्विक कला

---

* Corresponding author.

1. प्रस्तावना

भारतीय कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता की आत्मा, आध्यात्मिक चेतना, मनोभावों का अभिव्यक्तिकरण और सांस्कृतिक समृद्धि का जीवंत दस्तावेज है। भारत की भौगोलिक, भाषाई, धार्मिक और सामाजिक विविधता कला के विविध रूपों में परिलक्षित होती है।

भारतीय कला का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से प्रारंभ होकर समकालीन डिजिटल और इंस्टॉलेशन कला तक काफ़ी विस्तृत है। यह यात्रा निरंतर परिवर्तनीय, समन्वयात्मक और व्यक्खात्मक अभिव्यक्ति की सतत यात्रा है।

2. शोध के उद्देश्य

भाग I = भारतीय कला की ऐतिहासिक विविधता का विश्लेषण करना।

भाग II = विभिन्न कालखंडों में कला की निरंतर परंपराओं का गहन अध्ययन करना।

भाग III = भारतीय कला के वैश्विक संपर्क और प्रभावों का अध्ययन करना।

परंपरा और आधुनिकता के संवाद को समझना।

3. शोध-पद्धति

इस शोध-पत्र में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों—इतिहास ग्रंथों, कला समीक्षाओं, पुरातात्विक साक्ष्यों और समकालीन कला-विमर्श—का अध्ययन किया गया है।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

भाग १ = भारतीय कला की ऐतिहासिक विविधता का विश्लेषण

१.१ प्रागैतिहासिक कला और प्रारंभिक अभिव्यक्तियाँ

- **प्रागैतिहासिक काल की कला**

मध्यप्रदेश के भीमबेटका, पंचमढ़ी, होशंगाबाद, शिवपुरी आदि क्षेत्रों में शैलाश्रय पाए गए शैलचित्र भारतीय कला की आरंभिक चेतना के प्रमाण हैं। इन चित्रों में मानव आकृतियाँ, पशु, शिकार और सामूहिक नृत्य के दृश्य मिलते हैं।

यह कला केवल सजावटी नहीं थी, बल्कि यह दैनिक जीवन, अनुष्ठान और अस्तित्व की रक्षा की अभिव्यक्ति थी। मानव की कलाभिव्यक्ति की जिजीविषा ने उसके जीवन को सदा ही परिष्कृत किया।

- सिंहनपुर में अंकित असंख्य कंगारू, पंचमढ़ी में दैनिक जीवन के विभिन्न चित्र।
- भीमबेटका की 600 गुफाओं में 275 गुफाओं में जीवन के विभिन्न आयाम चित्रित हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता की कला

सिंधु सभ्यता (2300-1750 ईसा पूर्व) की प्राचीन नगरीय सभ्यताओं में से एक थी। इसकी कला अत्यंत विकसित, यथार्थवादी और उपयोगितावादी थी। इस सभ्यता की कला में सौंदर्य के साथ-साथ व्यावहारिकता और तकनीकी दक्षता स्पष्ट दिखाई देती है।

1. मूर्तिकला

कांस्य, पाषाण और मृद्भांड (टेराकोटा) की मूर्तियाँ प्रमुख हैं।

कांस्य की प्रसिद्ध "नर्तकी" प्रतिमा धातुकला की उच्च तकनीक को दर्शाती है।

पाषाण की "पुजारी-राजा" प्रतिमा गंभीर एवं शालीन अभिव्यक्ति का उदाहरण है।

पशु आकृतियाँ विशेष रूप से बैल, सांड, हाथी आदि अत्यंत यथार्थवादी ढंग से बनाई गईं।

2. मुहरें (Seals)

स्टियाटाइट (Soapstone) की बनी मुहरें इस सभ्यता की विशिष्ट पहचान हैं।

इन पर पशु आकृतियाँ (एक सींग वाला बैल/यूनिकॉर्न) तथा लिपि अंकित मिलती है। पशुपति मोहर इसका जीवंत उदाहरण है।

ये व्यापारिक और प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त होती थीं।

मृदभांड कला (Pottery)

लाल मृद्भांड पर काले रंग से ज्यामितीय और प्राकृतिक आकृतियाँ बनाई जाती थीं।

बर्तन आकार में संतुलित और सुंदर होते थे।

3. आभूषण कला

स्वर्ण, रजत, तांबा, मनके, शंख आदि से आभूषण बनाए जाते थे।

मनकों की कला अत्यंत सूक्ष्म और परिष्कृत थी।

मिताथल से प्राप्त शंख की चूड़ियां उत्कृष्ट कला का उदाहरण हैं।

कालीबंगा से प्राप्त सौंदर्य प्रसाधन उस समय की शहरी परिवेश को परिलक्षित करता है।

4. स्थापत्य कला

नगर नियोजन इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी।

सीधी सड़कों, जल-निकास व्यवस्था और पकी ईंटों का प्रयोग उल्लेखनीय है।

मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

सिंधु घाटी सभ्यता की कला में सादगी, यथार्थवाद और तकनीकी दक्षता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह कला धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई थी तथा भारतीय कला की प्राचीन आधारशिला मानी जाती है।

१.२ मौर्य और गुप्त काल : शास्त्रीय उत्कर्ष

मौर्यकालीन कला (लगभग 322–185 ई.पू.)

मौर्यकाल भारतीय कला के इतिहास में शाही संरक्षण और शिल्प-निपुणता का प्रारंभिक उत्कर्ष है। विशेषत: अशोक के शासन में कला का व्यापक विकास हुआ।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

मुख्य विशेषताएँ:

अशोक स्तंभ और शिलालेख – चिकनी चमकदार पॉलिश (Mauryan polish) इसकी पहचान है। सारनाथ का सिंहशीर्ष स्तंभ भारतीय राज्य-चिह्न का आधार बना।

1. शिल्पकला – यक्ष-यक्षी प्रतिमाएँ (जैसे दीदारगंज यक्षी) में भव्यता और गोलाईयुक्त आकार।
2. स्तूप स्थापत्य – प्रारंभिक रूप में स्तूप-निर्माण का विकास; बाद में सांची जैसे स्तूपों का विस्तार हुआ।
3. सामग्री और तकनीक – चूनार के बलुआ पत्थर का प्रयोग; अत्यंत परिष्कृत पॉलिश।

मौर्य कला में शाही शक्ति, धर्म-प्रसार (विशेषकर बौद्ध धर्म) और शिल्प-कौशल का संगम दिखाई देता है।

गुप्तकालीन कला (लगभग 200 ई.पू.–6वीं शताब्दी)

गुप्तकाल को भारतीय कला का “स्वर्ण युग” कहा जाता है। इस काल में आध्यात्मिकता, संतुलन और आदर्श सौंदर्य का उत्कर्ष हुआ।

मुख्य विशेषताएँ:

1. मूर्ति-कला – बुद्ध प्रतिमाओं में आध्यात्मिक शांति, मधुर मुस्कान और संतुलित अनुपात; सारनाथ और मथुरा शैली का विकास।
2. मंदिर स्थापत्य – प्रारंभिक संरचनात्मक मंदिरों का निर्माण; जैसे देवगढ़ का दशावतार मंदिर।
3. चित्रकला – अजंता गुफाएँ के भित्तिचित्रों में रेखा, रंग और भावाभिव्यक्ति का उत्कृष्ट समन्वय। महाराष्ट्र की अजंता गुफाएँ जिसमे भारतीय शास्त्रों में वर्णित चित्र शडांग पर आधारित कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं, जहाँ रंग, रेखा और भाव का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है।

आदर्शवाद – मानवीय आकृतियों में लावण्य, आध्यात्मिक भाव और शास्त्रीय संतुलन।

गुप्त कला ने भारतीय सौंदर्यशास्त्र को एक परिपक्व और शास्त्रीय स्वरूप दिया, जिसका प्रभाव आगे के मध्यकालीन कला-विकास पर भी पड़ा।

मौर्यकाल ने भारतीय कला को राजकीय संरक्षण और तकनीकी परिष्कार दिया, जबकि गुप्तकाल ने उसे आध्यात्मिक गहराई और शास्त्रीय आदर्श प्रदान किया। दोनों काल मिलकर भारतीय कला की निरंतरता और उत्कर्ष की आधारशिला बनाते हैं।

१.३ मध्यकालीन स्थापत्य और सांस्कृतिक समन्वय

मध्यकाल में भारतीय कला ने इस्लामी स्थापत्य , लयात्मकता व महीन रेखांकन ने भारतीय कला को नए आयाम दिए और लघुचित्र परंपरा भारत के विभिन्न क्षेत्रों राजस्थान,आगरा ,दिल्ली, हिमांचल प्रदेश में इस लघु चित्रण का गहरा प्रभाव दृष्टिगत होता है ।

सल्तनत काल का प्रभाव (1206–1526 ई.)

दिल्ली सल्तनत के आगमन के साथ भारत में इस्लामी संस्कृति, स्थापत्य और सौंदर्यबोध का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा।

मुख्य प्रभाव:

1. स्थापत्य कला में मेहराब (Arch), गुम्बद (Dome) और मीनार का प्रयोग बढ़ा।
2. मस्जिदों और मकबरों में ज्यामितीय अलंकरण, अरबेस्क डिज़ाइन और सुलेख (कूफ़ी/नस्तअलीक़ लिपि) का विकास हुआ।
3. हिंदू और इस्लामी शिल्प परंपराओं के समन्वय से इंडो-इस्लामिक शैली विकसित हुई।

प्रारंभिक पांडुलिपि-चित्रण में फारसी प्रभाव दिखाई देता है।

उदाहरणस्वरूप कुतुब मीनार सल्तनत काल की स्थापत्य उपलब्धि का प्रमुख प्रतीक है।

सल्तनत काल में लघुचित्रकला का स्वतंत्र रूप से व्यापक विकास नहीं हुआ, किंतु फारसी पांडुलिपि-चित्रण की परंपरा भारत में इसी समय आई, जिसने आगे मुगल लघुचित्र शैली की नींव रखी।

मुगल काल का प्रभाव (1526–1857 ई.)

मुगल काल भारतीय कला के इतिहास में सांस्कृतिक समन्वय और शाही संरक्षण का स्वर्णिम चरण है।

मुख्य प्रभाव:

भारतीय और फारसी कलात्मक तत्वों का संगम।

दरबारी संस्कृति, इतिहास, प्रकृति और व्यक्तिचित्र (Portraiture) का विकास।

स्थापत्य में भव्यता और सौंदर्य का समन्वय, जैसे ताजमहल।

चित्रकला में सूक्ष्म रेखांकन, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग और यथार्थवादी शैली।

ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

विशेषतः अकबर के काल में चित्रशालाओं की स्थापना हुई, जहाँ अनेक भारतीय और फारसी कलाकारों ने मिलकर काम किया।

1. मुगल लघुचित्रण शैली (Miniature Painting)

मुगल लघुचित्र शैली का विकास फारसी पांडुलिपि कला और भारतीय परंपरा के समन्वय से हुआ। जिसमे कुछ भारतीय कुछ अभारतीय ग्रंथों का लेखन ,चित्रण, व अनुवाद हुआ।

अभारतीय ग्रंथ-तारीखे अल्फी ,मुंतखाब उत तवारीख, हमजानामा, पदशाहनामा आदि

भारतीय ग्रंथ – रामायण,महाभारत,पंचतंत्र,हरिवंश पुराण आदि।

अन्य ग्रंथ- नुज़ूम उल उलूम, नौरस नामा, तूती नामा

विकास क्रम:

बाबर और हुमायूँ काल – फारसी प्रभाव प्रमुख।

अकबर काल – भारतीय विषयों का समावेश; रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों का चित्रण।

जहाँगीर काल – प्रकृति और पक्षी-चित्रण में उत्कृष्टता।

शाहजहाँ काल – सजावटी सौंदर्य और नाज़ुक शैली।

सल्तनत काल ने भारत में इस्लामी स्थापत्य और सजावटी कला की आधारभूमि तैयार की, जबकि मुगल काल ने कला को शाही संरक्षण देकर उसे परिपक्वता और अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान की।

लघुचित्रण शैली भारतीय और फारसी तत्वों के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसने आगे चलकर राजस्थानी और पहाड़ी चित्रशैलियों को भी प्रभावित किया।

इस प्रकार भारत में समसामयिक राजनैतिक परिस्थितियों का समय समय पर प्रभाव कला पर पड़ा जिसको भारतीय कला ने वृहद हृदय से अपनाया व आत्मसात किया व निरंतरता बनाए रखी।

१.४ लोक और जनजातीय कला की बहुलता

भारतीय कला की वास्तविक विविधता लोक और जनजातीय कलाओं में परिलक्षित होती है।

1. मधुबनी (बिहार)
2. वारली (महाराष्ट्र)
3. गोंड (मध्यप्रदेश)
4. पटचित्र (ओडिशा)

ये कलाएँ स्थानीय मिथकों, प्रकृति और सामाजिक जीवन से प्रेरित होती हैं।

१.५ आधुनिक भारतीय कला और राष्ट्रीय चेतना

औपनिवेशिक काल में पश्चिमी यथार्थवाद और अकादमिक शैली का प्रभाव पड़ा।

बंगाल स्कूल ने भारतीय परंपरा की पुनर्स्थापना का प्रयास किया। जिसमें अवनींद्रनाथ, गगनेंद्रनाथ, रवींदनाथ , ई. वी. हैवेल का अद्वितीय योगदान अविस्मरणीय है।

तत्पश्चात पैग ग्रुप के कलाकार एफ. एन. सूज़ा, एस. एच.राजा, एम. एफ. हुसैन, एस. बाकरे आदि ने मिल कर पुरानी पद्धतियों के प्रति उदासीनता कर ऐसी पद्धतियां अपनाई जिन्होंने भारतीय कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। गुलाम रसूल संतोष का तंत्र कला भारतीय विषयों से प्रेरित तो थी लेकिन उनकी कला प्रतीकात्मक होने कारण पूरे विश्व मे सराही गई।

भारत की आधुनिक कला में एम.एफ. हुसैन व के.के.हेब्बार का सशक्त रेखांकन भारतीय कला को नए आयाम देने में निश्चय ही कारगर रहा ।एस.एच. रज़ा, तैयब मेहता जैसे कलाकारों ने भारतीय विषयवस्तु को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया।

भाग २ = विभिन्न कालखंडों में कला परंपराओं की निरंतरता

२.१ प्रतीकों की निरंतरता

भारतीय कला में 'बिंदु', 'मंडल', 'नटराज', 'कमल', 'चक्र' जैसे प्रतीक प्राचीन काल से आज तक प्रयुक्त होते रहे हैं।

उदाहरणतः एस.एच. रज़ा के चित्रों में 'बिंदु' ब्रह्मांडीय ऊर्जा और आध्यात्मिक केंद्र का प्रतीक है व जी.आर.संतोष की देवी श्रंखला प्रतीकात्मक शाक्तकला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

1. दार्शनिक आधार और आध्यात्मिक चेतना

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

भारतीय कला वेद, उपनिषद, बौद्ध और जैन दर्शन से प्रभावित रही है। ध्यान, मोक्ष, करुणा और धर्म की अवधारणाएँ मूर्तिकला और चित्रकला में अभिव्यक्त हुईं।

2. गुरु-शिष्य परंपरा और शास्त्रीय सिद्धांत

नाट्यशास्त्र और शिल्पशास्त्र जैसे ग्रंथों ने कला के सिद्धांत निर्धारित किए। राजस्थानी कला में पिछवई कला , मुगल कला में ईरानी कलाएं गुरु शिष्य परंपरा के द्वारा कला की पर्याप्त सेवा की गई,आज भी देश के कुछ हिस्सों में यह परंपरा चल रही हैं। मंदिर स्थापत्य में वास्तुशास्त्र की निरंतरता आज भी देखी जा सकती है।

भाग ||| = भारतीय कला के वैश्विक संपर्क और प्रभावों का अध्ययन

परंपरा और आधुनिकता के संवाद

- **प्राचीन अंतरराष्ट्रीय संपर्क**

गांधार कला में यूनानी प्रभाव स्पष्ट है। बौद्ध कला के माध्यम से भारतीय शैली चीन, जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुँची।

प्राचीन भारतीय कला केवल स्थानीय या क्षेत्रीय अभिव्यक्ति नहीं थी, बल्कि वह आरंभ से ही अंतर-सांस्कृतिक संवाद का माध्यम रही। व्यापार, धर्म-प्रचार, यात्राओं और राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से भारतीय कला ने एशिया, मध्य एशिया और यहाँ तक कि भूमध्यसागरीय क्षेत्रों तक प्रभाव डाला। यह संवाद एकतरफा नहीं था; भारतीय कला ने बाहरी प्रभावों को आत्मसात करते हुए अपनी मौलिकता भी बनाए रखी।

प्राचीन भारतीय कला का वैश्विक संवाद मुख्यतः तीन माध्यमों से विकसित हुआ—

- धार्मिक प्रसार (विशेषकर बौद्ध धर्म)
- व्यापारिक संपर्क (स्थल और समुद्री मार्ग)
- सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आदान-प्रदान

1. प्रागैतिहासिक और प्रारंभिक संपर्क

३.१ प्रागैतिहासिक शैलचित्रों (जैसे भीमबेटका शैलाश्रय) का सीधा अंतरराष्ट्रीय संवाद प्रमाणित नहीं है, फिर भी शैलचित्र परंपरा में विश्व के अन्य भागों (स्पेन, फ्रांस, अफ्रीका) से समानताएँ यह दर्शाती हैं कि मानव सभ्यता की कलात्मक चेतना सार्वभौमिक थी।

सिंधु घाटी सभ्यता के मेसोपोटामिया से व्यापारिक संबंध थे, जिनके प्रमाण मुहरों और मोतियों में मिलते हैं। यह भारत और पश्चिम एशिया के बीच प्रारंभिक सांस्कृतिक संवाद का संकेत है।

३.२ मौर्यकाल और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव

मौर्यकाल (विशेषतः अशोक के समय) में भारतीय कला और धर्म का व्यापक प्रसार हुआ। अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु श्रीलंका, मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया तक दूत भेजे।

अशोक स्तंभों की शिल्प-शैली में आकेमेनिड (फ़ारसी) प्रभाव के संकेत मिलते हैं।

शेर-मुखी स्तंभ शीर्ष में पर्शियन स्तंभ-परंपरा का प्रभाव देखा जाता है।

यह काल भारतीय कला के औपचारिक वैश्विक संवाद का प्रारंभिक चरण माना जा सकता है।

३.३ गांधार कला : भारतीय-यूनानी समन्वय

प्राचीन भारतीय कला के वैश्विक संवाद का सबसे प्रमुख उदाहरण गांधार शैली है।

यह शैली उत्तर-पश्चिम भारत और अफगानिस्तान क्षेत्र में विकसित हुई।

सिकंदर के आक्रमण (326 ई.पू.) और बाद के इंडो-ग्रीक शासकों के प्रभाव से यूनानी शिल्प परंपरा भारत पहुँची।

बुद्ध की प्रतिमाओं में यूनानी यथार्थवाद, वस्त्र-वलयों (Drapery), घुँघराले बाल और शारीरिक अनुपात का प्रयोग हुआ।

गांधार कला भारतीय आध्यात्मिक विषय (बुद्ध) और यूनानी शिल्प-शैली का उत्कृष्ट समन्वय है। यह भारत और हेलेनिस्टिक विश्व के बीच सांस्कृतिक संवाद का जीवंत उदाहरण है।

बौद्ध कला का एशियाई प्रसार

बौद्ध धर्म के साथ भारतीय कला चीन, कोरिया, जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुँची।

स्तूप और विहार स्थापत्य का प्रभाव श्रीलंका और म्यांमार में देखा जा सकता है।

चीन के दूनहुआंग गुफा-चित्रों में भारतीय शैली की झलक मिलती है।

जापान और कोरिया की प्रारंभिक बुद्ध प्रतिमाएँ भारतीय आदर्शों से प्रेरित थीं।

भारत की सांची स्तूप जैसी स्थापत्य परंपराएँ एशियाई देशों में रूपांतरित होकर विकसित हुईं।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

यह प्रसार केवल धार्मिक नहीं, बल्कि कलात्मक आदान-प्रदान भी था।

३.४ **दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय प्रभाव**

भारतीय संस्कृति और कला का प्रभाव इंडोनेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड और वियतनाम तक फैला।

कंबोडिया का अंगकोरवाट मंदिर भारतीय हिंदू स्थापत्य से प्रभावित है।

जावा और बाली में रामायण और महाभारत की कथाएँ शिल्प और नृत्य में रूपांतरित हुईं।

यह संवाद व्यापारिक समुद्री मार्गों और ब्राह्मण-बौद्ध आचार्यों के माध्यम से संभव हुआ।

1. रेशम मार्ग (Silk Route) और सांस्कृतिक आदान-प्रदान

रेशम मार्ग के माध्यम से भारत, चीन और मध्य एशिया के बीच कला और वस्तुओं का आदान-प्रदान हुआ।

बौद्ध भित्तिचित्र और मूर्तिकला मध्य एशिया के खोतान और तुर्फान क्षेत्रों तक पहुँची।

भारतीय प्रतीक और रूपांकन स्थानीय संस्कृतियों के साथ मिश्रित हुए।

यह मार्ग भारतीय कला के अंतरराष्ट्रीय विस्तार का प्रमुख साधन था।

३.५भारतीय सौंदर्यशास्त्र का प्रभाव

भारतीय कला केवल रूपों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने दार्शनिक और सौंदर्यशास्त्रीय अवधारणाएँ भी प्रसारित कीं।

'ध्यान मुद्रा', 'करुणा' और 'मंडल' की अवधारणा एशियाई कला में दिखाई देती है।

नाट्यशास्त्र और रस सिद्धांत ने एशियाई नाट्य और प्रदर्शन कलाओं को प्रभावित किया।

वैश्विक संवाद की विशेषताएँ

प्राचीन भारतीय कला के वैश्विक संवाद की प्रमुख विशेषताएँ थीं—

1. आत्मसात करने की क्षमता – बाहरी प्रभावों को अपनाना, परंतु मूल पहचान बनाए रखना।

2. धार्मिक माध्यम – बौद्ध और हिंदू धर्म के प्रसार के साथ कला का विस्तार।

3. व्यापारिक संपर्क – समुद्री और स्थल मार्गों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

4. रूपांतरण (Adaptation) – स्थानीय संस्कृति के अनुसार भारतीय रूपों का परिवर्तन।

प्राचीन भारतीय कला का वैश्विक संवाद बहुआयामी और गतिशील था। यह संवाद केवल प्रभाव ग्रहण करने तक सीमित नहीं था, बल्कि भारतीय कला ने विश्व की अन्य सभ्यताओं को भी गहराई से प्रभावित किया।

गांधार शैली से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया के मंदिर स्थापत्य तक, भारतीय कला ने सांस्कृतिक समन्वय की एक अद्वितीय परंपरा स्थापित की।

अतः यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय कला वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक सेतु का कार्य करती रही—जहाँ आध्यात्मिकता, सौंदर्य और शिल्पकौशल के माध्यम से भारत ने विश्व कला-इतिहास में स्थायी स्थान बनाया।

३.६औपनिवेशिक काल और आधुनिकता का संवाद

ब्रिटिश काल में कला विद्यालयों की स्थापना से पश्चिमी तकनीकें आईं। भारतीय कलाकारों ने पारंपरिक विषयों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया। इस विशिष्ट शैली को कंपनी शैली के नाम से जाना गया, जिसका प्रमुख केंद्र पटना ,मुर्शिदाबाद आदि प्रमुख क्षेत्र थे। साहिब राम ,झूमक लाल शिव लाल ,ईश्वरी सेन आदि कलाकार मुख्य थे।जिन्होंने भारतीय विषयों को कंपनी शैली में बना कर भारतीय परिवेश की कला को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई तत्पश्चात दिन प्रतिदिन भारतीय कला व कलाकारों ने वैश्विक मंच पर अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की।

३.७ समकालीन वैश्वीकरण और भारतीय पहचान

आज भारतीय कला अंतरराष्ट्रीय संगृहालयों, नीलामी घरों में उपस्थित है।

अनिश कपूर, सुबोध गुप्ता,अर्पिता सिंह,अपर्णा कौर, नलिन मलानी, भारती खेर, जैसे कलाकार वैश्विक मंच पर भारतीय कला की नई पहचान निर्मित कर रहे हैं।

डिजिटल कला, इंस्टॉलेशन और वीडियो आर्ट के माध्यम से भारतीय कलाकार वैश्विक मुद्दों—पर्यावरण, राजनीति, प्रवासन, पहचान—पर संवाद कर रहे हैं।

21वीं सदी में वैश्वीकरण (Globalization) ने कला-जगत की संरचना, विषयवस्तु, बाज़ार और प्रस्तुति-शैली को गहराई से प्रभावित किया है। भारतीय कला भी इस प्रक्रिया से अछूती नहीं रही। समकालीन भारतीय कला आज स्थानीय अनुभवों और वैश्विक विमर्शों के बीच एक सक्रिय संवाद स्थापित कर रही है। यह संवाद केवल प्रभाव ग्रहण करने तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय कला स्वयं भी वैश्विक कला-परिदृश्य को प्रभावित कर रही है।

1. वैश्वीकरण की अवधारणा और कला

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

वैश्वीकरण का अर्थ है—आर्थिक, सांस्कृतिक, तकनीकी और वैचारिक स्तर पर देशों के बीच बढ़ता हुआ संपर्क और आदान-प्रदान। कला के संदर्भ में इसका अर्थ है:

- अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों और संगोष्ठियों का विस्तार
- वैश्विक कला-बाज़ार और नीलामी घरों की भूमिका
- डिजिटल माध्यमों के जरिए त्वरित प्रसार
- बहुसांस्कृतिक विषयों पर विमर्श

भारतीय कला अब केवल क्षेत्रीय या राष्ट्रीय पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि वह वैश्विक संवाद का हिस्सा बन चुकी है।

2. वैश्विक मंच पर भारतीय कलाकार

समकालीन भारतीय कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है।

- अनिश कपूर – उनकी मूर्तियाँ वैश्विक सार्वजनिक स्थलों और संग्रहालयों में प्रदर्शित हैं। वे भारतीय आध्यात्मिक अवधारणाओं को आधुनिक रूप में प्रस्तुत करते हैं।
- सुबोध गुप्ता – दैनिक जीवन की वस्तुओं (जैसे बर्तन) को इंस्टॉलेशन में बदलकर वैश्विक उपभोक्तावाद और प्रवासन पर टिप्पणी करते हैं।
- भारती खेर – भारतीय 'बिंदी' को समकालीन कला में रूपांतरित कर सांस्कृतिक पहचान पर विमर्श करती हैं।
- नलिन मलानी- वीडियो इंस्टालेशन के माध्यम से मन की पीड़ाओं की अभिव्यक्तिकरण को वरीयता देती हैं।

इन कलाकारों की कृतियाँ अंतरराष्ट्रीय नीलामी घरों और संगृहालयों में प्रदर्शित होती हैं, जिससे भारतीय कला वैश्विक बाजार का हिस्सा बनी है।

3. माध्यमों का विस्तार और तकनीकी परिवर्तन

वैश्वीकरण के साथ तकनीकी प्रगति ने कला के माध्यमों को व्यापक बनाया है।

- इंस्टॉलेशन आर्ट
- वीडियो आर्ट
- डिजिटल और न्यू मीडिया आर्ट
- परफॉर्मेंस आर्ट

भारतीय कलाकार पारंपरिक चित्रकला और मूर्तिकला से आगे बढ़कर मल्टीमीडिया प्रयोग कर रहे हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने कला के प्रचार-प्रसार को सरल बना दिया है।

4. विषयवस्तु में वैश्विक संवेदनाएँ

समकालीन भारतीय कला में निम्नलिखित वैश्विक विषय प्रमुख हैं:

- पहचान (Identity)
- प्रवासन (Migration)
- पर्यावरण संकट
- लैंगिक समानता
- राजनीति और सामाजिक असमानता

इन विषयों के माध्यम से भारतीय कलाकार स्थानीय अनुभवों को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण भारत की समस्याएँ भी वैश्विक पर्यावरणीय विमर्श से जुड़ती हैं।

३.८ परंपरा और आधुनिकता का समन्वय

वैश्वीकरण के बावजूद भारतीय कला अपनी सांस्कृतिक जड़ों से अलग नहीं हुई है।

'मंडल', 'बिंदु', 'लोक-आकृतियाँ' जैसे पारंपरिक प्रतीकों का आधुनिक पुनर्पाठ।

लोक और जनजातीय कला का अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में समावेश।

शास्त्रीय दर्शन को समकालीन रूप में प्रस्तुत करना।

यह समन्वय दर्शाता है कि भारतीय कला वैश्विक प्रभावों को आत्मसात करते हुए भी अपनी पहचान बनाए रखती है।

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन, बहुआयामी और निरंतर विकसित होने वाला रहा है। यहाँ परंपरा केवल अतीत का अवशेष नहीं, बल्कि जीवित सांस्कृतिक चेतना है। आधुनिकता केवल पश्चिमी प्रभाव का परिणाम नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक संदर्भों में भारतीय कलाकार की नई अभिव्यक्ति है। परंपरा और आधुनिकता का समन्वय भारतीय कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है।

1. परंपरा की आधारभूमि

भारतीय कला की जड़ें प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से लेकर शास्त्रीय मूर्तिकला, मंदिर वास्तुकला, लघुचित्र परंपरा और लोककलाओं तक फैली हुई हैं।

- सिंधु सभ्यता की मूर्तिकला और मुहरें
- मौर्य और गुप्तकाल की मूर्तिकला
- अजंता-एलोरा की भित्तिचित्र परंपरा
- राजस्थानी और पहाड़ी लघुचित्र शैली
- लोक एवं जनजातीय कला परंपराएँ

इन सभी में आध्यात्मिकता, प्रतीकात्मकता, लयात्मक रेखा, प्रकृति के साथ सामंजस्य और जीवन-दर्शन की गहराई दिखाई देती है। भारतीय परंपरागत कला का उद्देश्य केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति भी रहा है।

2. आधुनिकता का उद्भव

19वीं शताब्दी में अंग्रेज़ी शासन और पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय कला में नए परिवर्तन आरंभ हुए। यथार्थवाद, परिप्रेक्ष्य (Perspective), तैलचित्र तकनीक और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का विकास हुआ।

राजा रवि वर्मा राजा रवि वर्मा ने भारतीय पौराणिक विषयों को पश्चिमी यथार्थवादी शैली में प्रस्तुत किया। यह परंपरा और आधुनिक तकनीक का प्रारंभिक समन्वय था।

इसके बाद बंगाल स्कूल का उदय हुआ, जिसका नेतृत्व अबनिंद्रनाथ टैगोर अबनिंद्रनाथ टैगोर ने किया। इस आंदोलन ने भारतीयता को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया और पश्चिमी प्रभाव से हटकर पूर्वी सौंदर्यशास्त्र को अपनाया।

3. स्वतंत्रता के बाद आधुनिक कला और समन्वय

स्वतंत्रता के बाद भारतीय कलाकारों ने वैश्विक आधुनिक कला आंदोलनों (क्यूबिज़्म, अमूर्तवाद, अभिव्यंजनावाद आदि) को अपनाते हुए भारतीय तत्वों को बनाए रखा।

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप से जुड़े कलाकारों में:

- एम.एफ. हुसैन
- एस.एच. रज़ा
- एफ.एन. सूज़ा

इन कलाकारों ने आधुनिक शैली में भारतीय मिथकों, प्रतीकों और लोक तत्वों को समाहित किया।

उदाहरण के लिए, रज़ा के “बिंदु” चित्रों में भारतीय तांत्रिक प्रतीकवाद और आधुनिक अमूर्त शैली का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

4. लोक एवं जनजातीय कला का पुनर्पाठ

आधुनिक कलाकारों ने लोक परंपराओं से प्रेरणा ली—

- मधुबनी
- वारली
- गोंड
- पटचित्र आदि शैलियाँ आधुनिक माध्यमों में प्रस्तुत होने लगीं।

जगदीश स्वामीनाथन जगदीश स्वामीनाथन ने जनजातीय कला को आधुनिक संदर्भ में स्थापित करने का प्रयास किया।

यह समन्वय दर्शाता है कि आधुनिकता केवल शहरी बौद्धिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति से जुड़ी चेतना भी

5. समकालीन परिप्रेक्ष्य

आज की समकालीन भारतीय कला में डिजिटल माध्यम, इंस्टॉलेशन, परफॉर्मेंस आर्ट आदि का प्रयोग हो रहा है। फिर भी विषयवस्तु में भारतीय पहचान, स्मृति, परंपरा और सामाजिक यथार्थ जुड़े रहते हैं।

सुबोध गुप्ता सुबोध गुप्ता जैसे कलाकार रोज़मर्रा के भारतीय वस्तुओं (बर्तन आदि) को वैश्विक समकालीन कला में रूपांतरित करते हैं।

इस प्रकार परंपरा अब केवल शैली में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीकों और सामाजिक अनुभवों में जीवित है।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

6. समन्वय की विशेषताएँ

- विषय में भारतीयता, रूप में आधुनिकता।
- प्रतीकात्मकता और अमूर्तन का मेल।
- लोक तत्वों का वैश्विक प्रस्तुतीकरण।
- तकनीक में नवाचार, भाव में सांस्कृतिक निरंतरता।

भारतीय कला में परंपरा और आधुनिकता का संबंध विरोध का नहीं, बल्कि संवाद का है। परंपरा कलाकार को जड़ों से जोड़ती है, जबकि आधुनिकता उसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नवीन दृष्टि प्रदान करती है।

यही समन्वय भारतीय कला को विशिष्ट, जीवंत और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण बनाता है।

३.८ कला-बाज़ार और आर्थिक प्रभाव

वैश्विक कला-बाज़ार में भारतीय कला की मांग बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय नीलामी घरों में भारतीय कलाकारों की कृतियाँ उच्च मूल्य पर बिकती हैं। इससे कलाकारों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। इनमे एस. एच. रजा, व तैयब मेहता के नाम उल्लेखनीय हैं।

चुनौतियाँ

हालाँकि वैश्वीकरण के कई सकारात्मक प्रभाव हैं, परंतु कुछ चुनौतियाँ भी हैं:

- कला का बाज़ारीकरण (Commercialization)
- स्थानीय परंपराओं का क्षरण
- वैश्विक मानकों के दबाव में मौलिकता की समस्या

इन चुनौतियों के बीच भारतीय कलाकार संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

समकालीन वैश्वीकरण और भारतीय कला के बीच संबंध प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि संवाद और समन्वय का है। भारतीय कला वैश्विक मंच पर अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता के साथ उपस्थित है।

यह कहा जा सकता है कि आज भारतीय कला 'स्थानीय से वैश्विक' (Local to Global) की यात्रा पर है—जहाँ वह अपनी परंपराओं को नए माध्यमों और विचारों के साथ प्रस्तुत कर रही है। यही समन्वय भारतीय कला को समकालीन विश्व में प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाता है।

- **तुलनात्मक विश्लेषण**

परंपरा बनाम आधुनिकता नहीं, बल्कि संवाद भारतीय कला में परंपरा और आधुनिकता विरोधी ध्रुव नहीं हैं। यहाँ परिवर्तन, समन्वय और पुनराविष्कार की प्रक्रिया चलती रहती है।

लोक कला आज भी जीवित है, जबकि समकालीन कलाकार उसी लोक-संस्कृति को नए माध्यमों में प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष

- भारतीय कला अपनी बहुलता, निरंतरता और संवादात्मकता के कारण अद्वितीय है।
- विविधता – क्षेत्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक भिन्नताओं में अभिव्यक्ति।
- निरंतरता – आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक मूल्यों की अविच्छिन्न धारा।
- वैश्विक संवाद – ऐतिहासिक संपर्क से लेकर समकालीन वैश्वीकरण तक।
- भारतीय कला ने समय-समय पर बाहरी प्रभावों को आत्मसात किया, परंतु अपनी मूल सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखा। यही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

संदर्भ सूची

1. Agrawala, V. S. (1965). Indian art. Varanasi: Prithivi Prakashan.
2. Archer, W. G. (1957). Indian painting. London: Faber & Faber.
3. Asher, F. M. (2003). Art of India: Prehistory to the present. London: Thames & Hudson.
4. Mitter, P. (1994). Art and nationalism in colonial India, 1850–1922. Cambridge: Cambridge University Press.
5. Sivaramamurti, C. (1970). Indian sculpture. New Delhi: Allied Publishers.

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 53-61 (Total PP 09)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/SFAF2345

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 63-67 (Total PP 05)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/PXLU2890

PROMOTION AND PROPAGATION OF INDIAN CULTURE GLOBALLY THROUGH ORAL TRADITIONS LIKE FOLK SONGS OF BRAJ (**मौखिक परम्पराओं के अंतर्गत ब्रज के लोकगीतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का विश्वस्तर पर प्रचार एवं प्रसार**)

Babi Sharma[a]* **Sangeeta Srivastava**[b]

[a] *Music Department, Dayanand Girls' PG College, Civil Lines, Kanpur*
[b] *Professor & Head, Music Department, Dayanand Girls' PG College, Civil Lines, Kanpur*
[a]*Email: kbs.dgc@gmail.com*

Abstract

Oral tradition holds a position of immense significance within Indian culture. Spanning from the Vedic era to the modern age, songs, tales, folk songs, and ballads have served not merely as means of entertainment, but as conduits for social experiences, cultural heritage, and life values. Uttar Pradesh is often hailed as a "treasure trove of folk songs," where diverse genres—such as *Sohar*, wedding songs, *Birha*, *Chaiti*, *Kajri*, and seasonal songs—are widely prevalent. In particular, the *Rasiya*, *Languriya*, *Phag*, and *Jhula* folk songs of the Braj region are deeply intertwined with the divine exploits (*Lilas*) of Radha and Krishna, as well as with local traditions. Through stage performances, radio, television, and cinema, both male and female artists have garnered global recognition for these folk songs. Remaining flexible and adaptable over time, these oral traditions serve to guide society and bestow upon India a distinguished cultural standing on the global stage.

भारतीय संस्कृति में मौखिक परंपरा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक गीत कथाएँ लोकगीत और गाथाएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक अनुभव सांस्कृतिक धरोहर और जीवन मूल्यों के संवाहक रही हैं। उत्तर प्रदेश को लोकगीतों का खजाना" कहा जाता है जहाँ सोहर विवाह गीत बिरहा चैती कजरी और ऋतुगीत जैसी विविध शैलियाँ प्रचलित हैं। विशेष रूप से ब्रज क्षेत्र के रसिया लांगुरिया फाग और झूला लोकगीत राधा-कृष्ण की लीलाओं और स्थानीय परंपराओं से जुड़े हैं। महिला और पुरुष कलाकारों ने इन लोकगीतों को मंचीय प्रस्तुति रेडियो टेलीविजन और सिनेमा के माध्यम से वैश्विक पहचान दिलाई है। मौखिक परंपराएं समय के साथ लचीली और परिवर्तनीय होकर समाज को मार्गदर्शन देती हैं तथा भारत को विश्व स्तर पर सांस्कृतिक प्रतिष्ठा प्रदान करती हैं।

Keywords: Oral Tradition, Folk Songs, Braj Region, Indian Culture, Hindi Cinema, Cultural Heritage

मौखिक परंपरा, लोकगीत, ब्रज क्षेत्र, भारतीय संस्कृति, हिंदी सिनेमा, सांस्कृतिक धरोहर

---

* Corresponding author.

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध है। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि यहाँ ज्ञान, परंपराएँ और सांस्कृतिक धरोहरें केवल लिखित रूप में ही नहीं बल्कि मौखिक परंपरा के माध्यम से भी पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं। वैदिक काल में ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद जैसे ग्रंथ मौखिक रूप से ही संरक्षित किए गए। गुरुकुल परंपरा में विद्यार्थी अपने आचार्य से श्लोकों और मंत्रों को सुनकर याद करते थे और आगे आने वाली पीढ़ियों को सौंपते थे। इस प्रकार मौखिक परंपरा ने न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान को सुरक्षित रखा बल्कि सामाजिक जीवन, रीति-रिवाज और लोकधरोहर को भी संरक्षित किया।

2. कार्यप्रणाली

इस शोध पत्र की कार्यप्रणाली बहुआयामी है और इसे चार प्रमुख आधारों पर निर्मित किया गया है। मौखिक परंपराओं और ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और तुलनात्मक दृष्टि से भी किया गया है।

2.1 साहित्य समीक्षा

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 63-67 (Total PP 05)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/PXLU2890

सबसे पहले मौखिक परंपरा और लोकगीतों पर उपलब्ध ग्रंथों, शोध पत्रों और ऐतिहासिक स्रोतों का अध्ययन किया गया। वैदिक साहित्य, पुराण, उपनिषद और मध्यकालीन भक्ति साहित्य में मौखिक परंपराओं का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त आधुनिक विद्वानों द्वारा लिखे गए शोध ग्रंथों और आलेखों का भी विश्लेषण किया गया। साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ कि मौखिक परंपरा केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक जीवन, रीति-रिवाज और लोकधरोहर को भी संरक्षित करती रही है।

2.2 क्षेत्रीय अध्ययन

दूसरे चरण में क्षेत्रीय अध्ययन किया गया। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों-विशेषकर मथुरा, वृंदावन, आगरा और आसपास के ब्रज क्षेत्र में प्रचलित लोकगीतों का संकलन किया गया। स्थानीय कलाकारों, बुजुर्गों और लोकगायकों से बातचीत कर उनके अनुभवों को दर्ज किया गया। इस क्षेत्रीय अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि ब्रज क्षेत्र के रसिया, लांगुरिया, फाग और झूला गीत आज भी सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और इन्हें विशेष अवसरों पर गाया जाता है।

2.3 तुलनात्मक विश्लेषण

तीसरे चरण में तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। भारतीय मौखिक परंपरा की तुलना अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी मौखिक परंपराओं से की गई। अफ्रीका में लोकगीत स्वतंत्रता आंदोलनों और सामाजिक न्याय की अभिव्यक्ति का माध्यम बने, वहीं लैटिन अमेरिका में लोकगीतों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया। इस तुलना से यह स्पष्ट हुआ कि मौखिक परंपराएँ केवल स्थानीय धरोहर नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर संस्कृति के संप्रेषण का माध्यम हैं।

2.4 माध्यम विश्लेषण

चौथे चरण में माध्यम विश्लेषण किया गया। रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और हिंदी सिनेमा में लोकगीतों के प्रयोग का अध्ययन किया गया। विशेष रूप से हिंदी सिनेमा में ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों का प्रयोग हुआ है, जिससे इनकी पहचान विश्व स्तर पर बनी है। रेडियो और टेलीविजन ने लोकगीतों को घर-घर तक पहुँचाया, वहीं इंटरनेट और सोशल मीडिया ने इन्हें वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया।

2.5 निष्कर्ष

इस प्रकार कार्यप्रणाली के चारों आधारों—साहित्य समीक्षा, क्षेत्रीय अध्ययन, तुलनात्मक विश्लेषण और माध्यम विश्लेषण—से यह स्पष्ट हुआ कि मौखिक परंपराएँ और ब्रज क्षेत्र के लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूर्त धरोहर हैं। इनका अध्ययन केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी आवश्यक है।

3 परिणाम

इस शोध पत्र के अध्ययन से प्राप्त परिणामों को विभिन्न स्तरों पर प्रस्तुत किया जा सकता है। मौखिक परंपराओं और ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट हुआ कि ये केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं बल्कि सामाजिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

3.1 उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का वर्गीकरण

उत्तर प्रदेश को "लोकगीतों का खजाना" कहा जाता है। यहाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक, ऋतु परिवर्तन से लेकर धार्मिक उत्सव तक, हर अवसर पर अलग-अलग लोकगीत गाए जाते हैं। इन लोकगीतों को निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा जा सकता है:

- संस्कार गीत: सोहर (जन्म के अवसर पर), विवाह गीत, मुंडन संस्कार गीत, जनेऊ संस्कार गीत।
- ऋतु गीत: चैती (चैत्र मास में), कजरी (वर्षा ऋतु में), बारहमासा (बारह महीनों का वर्णन)।
- धार्मिक गीत: देवी-देवताओं की स्तुति, भजन, कीर्तन।
- सामाजिक गीत: गारी (विवाह में हास्य-व्यंग्य), बिरहा (विरह की पीड़ा), आल्हा (वीरगाथा)।

तालिका 1: उत्तर प्रदेश और ब्रज क्षेत्र के प्रमुख लोकगीतों का वर्गीकरण

लोकगीत का प्रकार	विवरण
सोहर गीत	जन्म और संस्कार अवसरों पर गाए जाते हैं
विवाह गीत	विवाह रस्मों में गाए जाने वाले गीत
रसिया गीत	राधा-कृष्ण प्रेम और रासलीला से संबंधित
लांगुरिया गीत	कैला देवी माता को समर्पित
फाग/होरी गीत	होली उत्सव, विशेषकर लठमार होली से संबंधित
झूला गीत	सावन और मल्हार से संबंधित, झूला झूलने के अवसर पर
कजरी गीत	वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले गीत
चैती गीत	चैत्र मास में गाए जाने वाले गीत

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 63-67 (Total PP 05)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/PXLU2890

आल्हा गीत	वीरगाथा और युद्ध कथाओं से संबंधित
बिरहा गीत	विरह की पीड़ा और भावनाओं का चित्रण

4.1 ब्रज क्षेत्र के प्रमुख लोकगीत

ब्रज क्षेत्र के लोकगीत विशेष रूप से राधा-कृष्ण की लीलाओं से जुड़े हैं। इनमें प्रमुख हैं:

- रसिया: राधा-कृष्ण प्रेम से संबंधित गीत, जो रासलीला में गाए जाते हैं।
- लांगुरिया: कैला देवी माता को समर्पित गीत।
- फाग/होरी: होली के अवसर पर गाए जाने वाले गीत, विशेषकर "लठमार होली" में।
- झूला: सावन और मल्हार से संबंधित गीत, जो झूला झूलने के अवसर पर गाए जाते हैं।

4.2 महिला कलाकारों का योगदान

महिला कलाकारों ने लोकगीतों के संरक्षण और प्रस्तुति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विवाह, जन्म और अन्य संस्कारों के अवसर पर महिलाएँ सामूहिक रूप से लोकगीत गाती हैं। उनकी गायकी में भावनाओं की गहराई और सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

4.3 पुरुष कलाकारों का योगदान

पुरुष कलाकारों ने लोकगीतों को मंचीय प्रस्तुति और सिनेमा के माध्यम से व्यापक पहचान दिलाई है। आल्हा और बिरहा जैसे वीरगाथा गीत प्रायः पुरुष कलाकारों द्वारा गाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, रेडियो और टेलीविजन पर भी पुरुष कलाकारों ने लोकगीतों को लोकप्रिय बनाया।

तालिका 2: महिला और पुरुष कलाकारों का योगदान लोकगीतों के संरक्षण और प्रसार में

पहलू	महिला कलाकारों का योगदान	पुरुष कलाकारों का योगदान
संस्कार गीत	जन्म, विवाह, मुंडन, जनेऊ आदि अवसरों पर सामूहिक रूप से गीत गाना; भावनाओं की गहराई और मातृत्व का चित्रण करना।	विवाह में गारी गीत, वीरगाथा गीत (आल्हा, बिरहा) गाना; सामाजिक रस्मों में सक्रिय भागीदारी।
धार्मिक गीत	देवी-देवताओं की स्तुति, भजन और कीर्तन में सामूहिक गायन; घर-घर में परंपरा को जीवित रखना।	मंदिरों और मंचों पर भजन-कीर्तन का नेतृत्व करना; धार्मिक उत्सवों में लोकगीतों का प्रसार।
ऋतु गीत	सावन, मल्हार और कजरी गीतों में प्रकृति और भावनाओं का चित्रण; स्त्रियों का सामूहिक गायन।	चैती और बारहमासा गीतों में ऋतु परिवर्तन का वर्णन; मेलों और उत्सवों में प्रस्तुति।
मंचीय प्रस्तुति	घरेलू और सामुदायिक स्तर पर लोकगीतों का संरक्षण; पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा को आगे बढ़ाना।	लोकगीतों को मंचीय रूप देना; बड़े आयोजनों और मेलों में प्रस्तुति देना।
सिनेमा और आधुनिक माध्यम	सीमित भागीदारी, लेकिन महिला कलाकारों ने फिल्मों में पारंपरिक गीतों को जीवित रखा।	रेडियो, टेलीविजन और हिंदी सिनेमा में लोकगीतों को लोकप्रिय बनाना; वैश्विक पहचान दिलाना।
चुनौतियाँ	घरेलू जिम्मेदारियों के साथ कला को जीवित रखना; सामाजिक प्रतिबंधों के बावजूद परंपरा को आगे बढ़ाना।	आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखना; व्यावसायिकरण के दबाव में लोकगीतों की मौलिकता को सुरक्षित रखना।

4.4 हिंदी सिनेमा में ब्रज लोकगीतों का प्रयोग

हिंदी सिनेमा में ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों का प्रयोग विशेष रूप से हुआ है। फिल्मों में रसिया और फाग गीतों का प्रयोग कर दर्शकों को ब्रज संस्कृति से परिचित कराया गया। इससे लोकगीतों की पहचान केवल स्थानीय स्तर पर ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बनी।

4.5 सारांश

परिणामस्वरूप यह स्पष्ट हुआ कि मौखिक परंपराएँ और ब्रज क्षेत्र के लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूर्त धरोहर हैं। ये केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक जीवन, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक पहचान का प्रतिबिंब हैं। महिला और पुरुष कलाकारों के योगदान तथा आधुनिक माध्यमों के प्रयोग से इनकी पहचान विश्व स्तर पर बनी है।

5 चर्चा

मौखिक परंपराएँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज की आत्मा और संस्कृति का जीवंत प्रतिबिंब हैं। लोकगीतों और मौखिक परंपराओं के माध्यम से समाज अपने अनुभवों, भावनाओं और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करता है। ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि ये गीत केवल धार्मिक या भक्ति भावनाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक जीवन, प्रेम, विरह, उत्सव और प्रकृति का भी चित्रण करते हैं।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 63-67 (Total PP 05)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/PXLU2890

तालिका 3: ब्रज और उत्तर प्रदेश के प्रमुख लोकगीत कलाकारों के नाम, योगदान और संदर्भ

कलाकार का नाम	योगदान	संदर्भ
गौरव कृष्ण गोस्वामी	रसिया और भक्ति गीतों की प्रस्तुति; ब्रज संस्कृति को मंचीय रूप देना।	भारतीय संगीत परिषद्, 2018
हेमा मालिनी	ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को नृत्य और लोकगीतों के माध्यम से लोकप्रिय बनाना।	सांस्कृतिक मंत्रालय रिपोर्ट, 2020
शारदा सिन्हा	कजरी और सोहर गीतों की प्रसिद्ध गायिका; उत्तर भारत में लोकगीतों को लोकप्रिय बनाना।	लोकसंगीत अध्ययन, 2015
मालिनी अवस्थी	उत्तर प्रदेश के चैती, कजरी और बिरहा गीतों की प्रस्तुति; लोकगीतों को आधुनिक मंच पर लाना।	संगीत नाटक अकादमी, 2019
गोपाल शरण	आल्हा और वीरगाथा गीतों के प्रसिद्ध गायक; लोकगीतों को ग्रामीण समाज में जीवित रखना।	ग्रामीण संस्कृति शोध, 2017
अनुराधा पौडवाल	भक्ति और देवी-देवताओं से संबंधित लोकगीतों को लोकप्रिय बनाना।	हिंदी सिनेमा अध्ययन, 2016
विदुषी माधुरी शर्मा	ब्रज क्षेत्र की पारंपरिक लोकगायिका; रसिया और फाग गीतों की प्रस्तुति द्वारा लोकधरोहर को जीवित रखना।	**बांसुरी ब्रज की**: संपादक: गोहनबलाल मधुकर, **लोक संगीत की सशक्त कलाकार विदुषी माधुरी शर्मा** प्रकाशन: *हिन्दुस्तान* समाचार पत्र (वाराणसी संस्करण, 13 जनवरी 2022)

5.1 सामाजिक महत्व

लोकगीतों में समाज की सामूहिक चेतना और अनुभव झलकते हैं। विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत केवल रस्मों का हिस्सा नहीं होते, बल्कि वे परिवार और समाज की एकता को भी दर्शाते हैं। इसी प्रकार जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले सोहर गीत मातृत्व और जीवन की नई शुरुआत का उत्सव होते हैं। इस प्रकार लोकगीत समाज को जोड़ने और सामूहिकता को मजबूत करने का कार्य करते हैं।

5.2 सांस्कृतिक पहचान

ब्रज क्षेत्र के रसिया और फाग गीतों में राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन होता है। ये गीत ब्रज की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा हैं। जब विदेशी पर्यटक ब्रज आते हैं और इन गीतों को सुनते हैं, तो वे भारतीय संस्कृति की गहराई और विविधता से परिचित होते हैं। इस प्रकार लोकगीत सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने और उसे विश्व स्तर पर प्रस्तुत करने का माध्यम बनते हैं।

5.3 वैश्विक दृष्टिकोण

तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि मौखिक परंपराएँ केवल भारत तक सीमित नहीं हैं। अफ्रीका में लोकगीत स्वतंत्रता आंदोलनों का माध्यम बने, वहीं लैटिन अमेरिका में लोकगीतों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया। भारत में भी लोकगीतों ने सामाजिक न्याय, समानता और स्वतंत्रता की भावना को अभिव्यक्त किया। इस प्रकार मौखिक परंपराएँ वैश्विक स्तर पर संस्कृति के संप्रेषण का माध्यम हैं।

5.4 आधुनिक माध्यमों की भूमिका

रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट ने लोकगीतों को नए मंच दिए हैं। पहले लोकगीत केवल गाँवों और समाज के छोटे समूहों तक सीमित थे, लेकिन अब वे वैश्विक स्तर पर सुने और देखे जा सकते हैं। हिंदी सिनेमा ने भी लोकगीतों को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्मों में लोकगीतों का प्रयोग कर दर्शकों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया गया।

5.5 महिला और पुरुष कलाकारों की चुनौतियाँ

महिला कलाकारों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह रही है कि वे घरेलू जिम्मेदारियों के साथ अपनी कला को कैसे जीवित रखें। इसके बावजूद उन्होंने लोकगीतों को संरक्षित किया और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया। पुरुष कलाकारों ने मंचीय प्रस्तुति और सिनेमा के माध्यम से लोकगीतों को व्यापक पहचान दिलाई। आज भी कलाकारों के सामने यह चुनौती है कि वे आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखें।

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 63-67 (Total PP 05)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/PXLU2890

5.6 निष्कर्षात्मक चर्चा

इस चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि मौखिक परंपराएँ और ब्रज क्षेत्र के लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूर्त धरोहर हैं। ये केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक पहचान और वैश्विक संप्रेषण का माध्यम हैं। आधुनिक माध्यमों और कलाकारों के योगदान से इनकी पहचान विश्व स्तर पर बनी है और भविष्य में भी यह परंपरा समाज को मार्गदर्शन देती रहेगी।

6 निष्कर्ष

मौखिक परंपराएँ भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, इन परंपराओं ने समाज को जोड़ने, जीवन मूल्यों को संप्रेषित करने और सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का कार्य किया है। लोकगीतों के माध्यम से समाज ने अपनी भावनाओं, अनुभवों और जीवन की विविधताओं को अभिव्यक्त किया है। इस शोध पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि उत्तर प्रदेश विशेष रूप से “लोकगीतों का खजाना” है। यहाँ जन्म, विवाह, ऋतु परिवर्तन और धार्मिक उत्सवों के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीत समाज की सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब हैं। ब्रज क्षेत्र के रसिया, लांगुरिया, फाग और झूला गीत राधा-कृष्ण की लीलाओं से जुड़े हुए हैं और इनकी प्रस्तुति आज भी समाज को भक्ति, प्रेम और आनंद से भर देती है। महिला कलाकारों ने लोकगीतों को संरक्षित करने और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पुरुष कलाकारों ने मंचीय प्रस्तुति, रेडियो, टेलीविज़न और सिनेमा के माध्यम से लोकगीतों को व्यापक पहचान दिलाई। इस प्रकार महिला और पुरुष दोनों कलाकारों का योगदान लोकगीतों की निरंतरता और लोकप्रियता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। आधुनिक माध्यमों—रेडियो, टेलीविज़न, इंटरनेट और हिंदी सिनेमा—ने लोकगीतों को नए मंच दिए हैं। पहले लोकगीत केवल गाँवों और समाज के छोटे समूहों तक सीमित थे, लेकिन अब वे वैश्विक स्तर पर सुने और देखे जा सकते हैं। हिंदी सिनेमा ने लोकगीतों को लोकप्रिय बनाने में विशेष भूमिका निभाई है। फिल्मों में लोकगीतों का प्रयोग कर दर्शकों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराया गया और इनकी पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनी। तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि मौखिक परंपराएँ केवल भारत तक सीमित नहीं हैं। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में भी लोकगीतों ने सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया। इस प्रकार मौखिक परंपराएँ वैश्विक स्तर पर संस्कृति के संप्रेषण का माध्यम हैं। अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मौखिक परंपराएँ और ब्रज क्षेत्र के लोकगीत भारतीय संस्कृति की अमूर्त धरोहर हैं। ये केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि समाज को मार्गदर्शन देने, सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने और जीवन मूल्यों को संप्रेषित करने का माध्यम हैं। आधुनिक माध्यमों और कलाकारों के योगदान से इनकी पहचान विश्व स्तर पर बनी है और भविष्य में भी यह परंपरा समाज को दिशा देती रहेगी।

आभार

इस शोध कार्य में सहयोग देने वाले स्थानीय लोक कलाकारों, सांस्कृतिक संस्थाओं और शैक्षणिक संस्थानों का आभार

7- संदर्भ सूची

इस शोध पत्र के निर्माण में विभिन्न प्रकार के साहित्य, ग्रंथ और आधुनिक माध्यमों का उपयोग किया गया है। मौखिक परंपराओं और ब्रज क्षेत्र के लोकगीतों पर आधारित अध्ययन को निम्नलिखित संदर्भ से बल मिला है:

1. गांधी, महात्मा। लोकगीतों पर विचार।
2. पुराण और भक्ति साहित्य (भागवत पुराण, गीत गोविंद)।
3. शर्मा, रामकुमार। *भारतीय लोकसंगीत का इतिहास*।
4. मिश्र, गोविंद। *ब्रज संस्कृति और लोकगीत*।
5. सिंह, राधेश्याम। *उत्तर प्रदेश के लोकगीतों का समाजशास्त्रीय अध्ययन*।
6. भारतीय संगीत परिषद् (2018).
7. सांस्कृतिक मंत्रालय रिपोर्ट (2020).
8. लोकसंगीत अध्ययन (2015).
9. संगीत नाटक अकादमी (2019).
10. ग्रामीण संस्कृति शोध (2017).
11. ब्रज संस्कृति सम्मेलन (2021).
12. क्षेत्रीय अध्ययन (2014).
13. लोकगाथा संग्रह (2013).
14. क्षेत्रीय सर्वेक्षण (2012).
15. हिंदी सिनेमा अध्ययन (2016).
16. इंटरनेट और रेडियो प्रसारण से प्राप्त सामग्री।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 63-67 (Total PP 05)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/PXLU2890

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 69-74 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/GVIK8886

COMMUNITY, SKILL AND IDENTITY IN THE FOLK CRAFT TRADITION OF THE CHITRAKOOT REGION (**चित्रकूट परिक्षेत्र के लोक शिल्प परम्परा में समुदाय**, **कौशल और पहचान**)

Dhirendra Kumar [a]* **Dr. Jai Shankar Mishra**[b]

[a] *Research Scholar, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramoday University, Chitrakoot, Satna, Madhya*
[a] *Associate Professor, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramoday University, Chitrakoot, Satna, Madhya Pradesh*
[a]*Email: -Dheerendrap96@gmail .com*

Abstract

This research paper focuses on 'Community, Skill, and Identity within the Folk Craft Traditions of the Chitrakoot Region,' with the primary objective of analyzing the intrinsic relationship between folk painting and craft arts within a socio-cultural context. The study aims to identify craft elements (such as ornamentation and patterns) within folk paintings, examine their technical, structural, and symbolic commonalities, and understand the role of the artist.

Employing a qualitative research methodology, the study sheds light on several significant crafts and art forms of the Chitrakoot region. Prominent among these are *Shijar* stone (a translucent stone found in the Ken River of Banda district, used for jewelry making), woodcraft (comprising sculptures, furniture, and daily-use items crafted from *Sheesham* and mango wood), and *Vedu* craft (baskets and fans made from bamboo). Additionally, the local tradition of *Mahabuliya*, along with other styles such as *Madhubani*, *Warli*, *Gond*, and *Phad* painting, have also been discussed.

Within folk paintings, craft elements manifest in the form of structural similarities (such as repetition and symmetry) and shared symbolism (depicting figures such as Lord Rama, the Sun, and trees). Both art forms are deeply intertwined with the local environment, natural resources, and community traditions.

The conclusion posits that folk painting draws inspiration from craft traditions, while craft arts lend narrative depth to painting. From a contemporary perspective—and despite the influence of market forces and modern media—these art forms remain emblematic of the region's folk life and culture, underscoring the imperative need for their preservation and documentation.

यह शोध-पत्र **'चित्रकूट परिक्षेत्र के लोक शिल्प परम्परा में समुदाय, कौशल और पहचान'** पर केंद्रित है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोक चित्रकला और शिल्प कला के अंतर्निहित संबंधों को सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में विश्लेषित करना है। शोध का लक्ष्य लोक चित्रों में शिल्प तत्वों (जैसे अलंकरण और पैटर्न) की पहचान करना, उनकी तकनीकी, संरचनात्मक और प्रतीकात्मक समानताओं का अध्ययन करना, और कलाकार की भूमिका को समझना है।

गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग करते हुए, अध्ययन ने चित्रकूट परिक्षेत्र के कई महत्वपूर्ण शिल्पों और कलाओं पर प्रकाश डाला है। इनमें बांदा जिले की केन नदी में मिलने वाला **शिजर पत्थर** (आभूषण निर्माण हेतु अर्द्धपारदर्शी), **काष्ठ शिल्प** (शीशम और आम की लकड़ी से निर्मित मूर्तियाँ, फर्नीचर और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ), और बांस से निर्मित **वेडू शिल्प** (टोकरियाँ, पंखे) प्रमुख हैं। इसके साथ ही, स्थानीय परंपरा **महाबुलिया** और अन्य शैलियों जैसे मधुबनी, वारली, गोंड तथा फड़ चित्रकला का भी उल्लेख किया गया है।

लोक चित्रों में शिल्प तत्व, संरचनात्मक समानता (जैसे दोहराव और सममिति) और साझा प्रतीकात्मकता (जैसे भगवान राम, सूर्य, वृक्ष) के रूप में स्पष्ट होते हैं। दोनों कलाएँ स्थानीय वातावरण, प्राकृतिक संसाधनों और सामुदायिक परंपराओं से गहराई से जुड़ी हैं।

निष्कर्ष में बताया गया है कि लोक चित्रकला शिल्प परंपरा से प्रेरणा लेती है, जबकि शिल्प कला चित्रकला को कथात्मक विस्तार देती है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में, बाजार और आधुनिक माध्यमों के प्रयोग के बावजूद, ये कलाएँ क्षेत्रीय लोक जीवन और संस्कृति की परिचायक हैं, जिनके संरक्षण और प्रलेखन की आवश्यकता है।

Keywords: Chitrakoot: Folk Crafts, Community, Skills, Identity

चित्रकूट लोक शिल्प, समुदाय, कौशल, पहचान

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 69-74 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/GVIK8886

---

* Corresponding author.

1. प्रस्तावना

चित्रकूट कला परंपरा में लोक कला का विशिष्ट स्थान है। हमारी लोक संस्कृति लोक शक्ति की प्रेरणाधर है। कला का अपना एक इतिहास रहा है। जिस पर आज की लोक कला खड़ी है। कला के द्वारा मानव के विकास के लिए शाख वर्णित अनिवार्य चारों पुरूषार्थ (**धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष**) को कला के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यह तथा चित्र चित्र सूत्र के निम्न श्लोक में स्पष्ट हो जाता है।

"कलानां प्रवरं चित्र, धर्म कामार्थीमोक्षदम ।

मांगल्य प्रथम ह्येतद्, गृहे यत्र प्रतिष्ठितम ।।1

अर्थात् कला में चित्र रचना श्रेष्ठ है। यह धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्रदायक है। इसके सृजन का उद्देश्य घर में मंगल भावना का संचार करना है और कला के सौन्दर्य बोध से सब कुछ संभव है। अनुभूति और प्रदेश के बुन्देली एवं बघेली लोक कला-महाबुलिया पर विचार प्रस्तुत है।लोक चित्रकला ग्रामीण और जनजातीय समाज की सांस्कृतिक चेतना का दृश्य रूप है। यह कला परंपरागत रूप से दीवारों, आंगनों, कपड़ों और प्राकृतिक सतहों पर अंकित की जाती रही है। दूसरी ओर, शिल्प कला में मिट्टी के बर्तन, आभूषण, लकड़ी के खिलौने, धातु मूर्तियाँ और दैनिक उपयोग की वस्तुएँ शामिल हैं। लोक चित्रकला और शिल्प कला के अंतर्निहित संबंधों को समझने के लिए आवश्यक है कि इन्हें केवल दृश्य कला के रूप में न देखा जाए, बल्कि इन्हें सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं के संदर्भ में भी विश्लेषित किया जाए। आज हमारे बीच उसे परंपरा को जीवित एवं सार्थक बनाने वाले कई ईस्ट कलाकार हैं उनमें कइयों की विशाल शिष्य- परंपरा यह है, और कई अपने-अपने ढंग से, अपने-अपने क्षेत्र में प्रचार से दूर रहकर निरंतर कार्य रथ है। राष्ट्रीय स्तर पर उनका यह सहमिलन हमें जो पुलक प्रदान कर रहा है, उसे मात्र शब्द में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

2. अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी कार्य को आरंभ करने से पूर्व उसके लक्ष्य व उद्देश्य का उचित निर्धारण उसकी सफलता को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होती है। निर्धारित उद्देश्यों के आधार पर ही शोध की प्रविधि न्यादर्श आदि का अनुपालन कर परिणाम की प्राप्ति हेतु शोधकर किया जाता है।

1. विविध लोक चित्रों में शिल्प तत्वों की पहचान करना।

2. लोक चित्रकला और शिल्प कला के तकनीकी, संरचनात्मक और प्रतीकात्मक संबंधों का अध्ययन करना।

3. लोक कलाकार की बहुआयामी भूमिका को समझना।

4. प्राप्त शिल्प कला पर प्रभाव का अध्ययन करना।

3. शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति मुख्यतः गुणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें निम्नलिखित विधियों के द्वारा इस शोध कार्य को सम्पन्न किया गया–

1. लोक कला पर उपलब्ध साहित्य और शोध ग्रंथ

• विभिन्न पुस्तकालय में जाकर संबंधित साहित्य का अध्ययन करके शोध कार्य को पूर्ण किया गया है साथ ही विषय से संबंधित पूर्व में हो चुके शोध कार्यों का भी पूर्व अवलोकन किया गया।

2. संग्रहालयों एवं कला दीर्घाओं में प्रदर्शित कृतियों का अवलोकन।

• **ब्राह्मण एवं सर्वेक्षण विधि-** विभिन्न संग्रहालय एवं कला अधीर गांव में व्यक्तिगत रूप से जाकर विषय से संबंधित कलाकृतियों का अवलोकन और सर्वेक्षण किया गया

3. प्रचलित आंचलिक शिल्प लोक उत्सव में प्रिया चित्रों का अध्ययन।

4. भारतीय लोक चित्रों का स्वरूप

4.1 शिजर पत्थर (Shajar stone)

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 69-74 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/GVIK8886

शजर एक प्रकार का पत्थर है, जो नदियों में पाया जाता है। विशेष रुप से इस प्रकार के पत्थरों को उत्तर प्रदेश के चित्रकूट से 72 किलो मीटर दूर बांदा जिला में प्रवाहमान केन नदी में देखा जा सकता है। यह पत्थर अर्द्धपारदर्शी होता है। इस प्रकार के पत्थरों के बीच में जीवाश्म के दब जाने से उसमें कई अनोखी आकृतियों का स्वतः निर्माण होता रहता है। जिसे यहां के स्वर्णकार अथवा अन्य शिल्पकार तरास कर अथवा काट-छांट कर गहना, आभूषण व अन्य स्वरूप प्रदान करते हैं। व्यवसाय के रुप में प्रयुक्त इस पत्थर को तरास कर विभिन्न आकृतियाँ प्रदान की जाती है।

चित्र 1। चित्र 2। चित्र 3

4.2 मधुबनी चित्रकला

मिथिला की यह मधुबनी लोक कला शैली न जाने कि पुरातन काल से पल्लवित पुष्पित होती आ रही है, जो पिछले साड़ी के 70 के दशक में मिथिला से बाहर निकली राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पर फेल कर दमकन लगी। इससे पूर्व यह मात्र आंचलिक व क्षेत्रीय कला शैली थी। स्वतंत्रता के उपरांत अचानक इसके प्रति देश व विदेश के कला प्रसंस्को का ध्यान खींची और यह एक महत्वपूर्ण कला शैली के रूप में स्थापित हो गई।“इसे जितना राष्ट्रीय महत्व मिला उससे कहीं ज्यादा विदेशियों के बीच लोकप्रिय हुई। विदेशी बैठक ऑन में यह स्थान पर अपने लगी विदेश में इसकी खेती ऐसी फैली कि वहां के कल प्रशंसक मिथिलांचल की ओर आकर, चित्रों की छायांकन कर वक्रय कर अपने साथ ले जाने लगे”**2**

क बिहार के मिथिला क्षेत्र की मधुबनी चित्रकला में प्राकृतिक रंगों और हस्तनिर्मित कागजों का प्रयोग होता है। इसकी रेखाएं स्पष्ट और सजावटी होती हैं। शिल्प तत्व इसमें अलंकरण, पैटर्न और वस्त्र सज्जा के रूप में दिखाई देते हैं।

चित्र. 1 चित्र. 2 चित्र. 3

4.3 चित्रकूट के काष्ठ शिल्प

काष्ठ अथवा लकड़ी की उपयोगिता मानव जीवन में अति प्राचीन है। संस्कृत भाषा में इसे दारू शब्द से संबंध संबोधित किया गया है, जबकि अंग्रेजी में इसे wood कहा जाता है। विभिन्न उपयोग हेतु यहाँ निर्मित काष्ठ की सामग्रियों में भी एक विशेष प्रकार की सृजनात्मकता व कलात्मकता देखी जाती है। यद्यपि यहाँ काष्ठ की प्रतिमाओं का निर्माण अधिक प्रचलित है तथापि दैनिक उपयोग की सामग्रियों में कलात्मक प्रवाह देखा जा सकता है। काष्ठ से निर्मित सामग्रियाँ, दरवाजों में अलकरण, दाबि, लावनि, खराऊँ, खरपा आदि का उपनयन व विवाह संस्कार के साथ 'दैनिक' कार्यों में भी प्रयोग किया जाता है। साथ ही लकड़ी की नक्काशीदार फर्नीचर का निर्माण भी यहाँ प्रचुरता में होता है। लकड़ी की सामग्रियों के निर्माण हेतु मुख्यतः शीशम, आम, सेमल, गम्भारि, कटहल आदि का प्रयोग होता है।

Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 69-74 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/GVIK8886

चित्र 1। चित्र 2। चित्र 3

4.4 वेडू शिल्प

चित्रकूट की लोक कला का एक सुंदर व आकर्षण प्रदर्शन **वेडू शिल्प** आदि की कलात्मक समग्र में दृष्टिगोचर होता है आवश्यकता पर आधारित इस कला सामग्रियों में लोक आकर, लोकरंग आदि का भाव निहित रहता है। बांस की बनी छोटी- बड़ी टोकरियां,पंखे, फूल डाली आदि की आकृतियां बड़ी ही मनमोहक होती हैं बांस से बने इन आकृतियों पर रंगंकन भी किया जाता है

4.5 वारली चित्रकला

महाराष्ट्र की वारली चित्रकला ज्यामितीय आकृतियों पर आधारित है। मिट्टी की दीवारों पर चावल के घोल से चित्रांकन किया जाता है। यह तकनीक शिल्प कला की सरलता और संरचनात्मक दृष्टि को दर्शाती है।

4.6 गोंड चित्रकला

मध्यप्रदेश की गोंड चित्रकला में सूक्ष्म रेखांकन और बिंदुओं का प्रयोग होता है। यह शैली जनजातीय शिल्प परंपरा से प्रभावित है, जहाँ लकड़ी और धातु पर भी इसी प्रकार के पैटर्न मिलते हैं।

गोंड कला की प्रमुख विशेषताएँ:

•उत्पत्तिः यह मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र के क्षेत्रों में गोंड जनजाति द्वारा विकसित की गई, जिसे प्रधान उप-जाति के कलाकारों ने जीवंत रखा।

• प्रकृति से जुड़ावः गोंड कला में प्रकृति, जैसे पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और देवी-देवताओं का प्रमुखता से चित्रण होता है।

• कला तकनीकः इसमें आकृतियों को डॉट और सूक्ष्म रेखाओं का उपयोग करके भरा जाता है, जिससे चित्र में गहराई और बनावट आती है। रंगों का प्रयोगः पारंपरिक रूप से प्राकृतिक रंगों (जैसे चारकोल, गेरू, हल्दी, पत्तियों का रस) का उपयोग किया जाता था, लेकिन अब इसमें आधुनिक रंगों का भी प्रयोग होने लगा है।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 69-74 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/GVIK8886

चित्र 1। चित्र 2। चित्र 3

4.7 फड़ चित्रकला

राजस्थान की फड़ चित्रकला कथात्मक चित्रकला है, जो कपड़े पर बनाई जाती है। यह चित्रकला वस्त्र शिल्प, रंग-निर्माण और धार्मिक कथाओं का संयुक्त रूप है।

4.8 महाबुलिया

इस लोक परंपरा को क्वार के माह में आस्था से पहले पितृ पक्ष के पूरे 15 दिन इस अवसर पर लड़कियां चबूतरे में गोबर से लिप कर चौक पूरते हैं। बबूल के काटे का झाड़ लेकर उसे फूलों से सजाकर हाथों में भिगो हुए चने के दाल (दियूल) लेकर झाड़ चौक के ऊपर रखकर 15 दिन उसकी पूजा वी परिक्रमक करती हैं। पूजा करने के बाद उसे पास के तालब पर जा कर उसके फूलों को खोटती (विसर्जन) करती हैं ।

चित्र .1 चित्र.2 चित्र. 3

5. लोक चित्रों में शिल्प तत्व

5.1 माध्यम और सामग्री

चित्रकूट परिक्षेत्र की कला परंपरा में प्रयोग होने वाली विधियाँ और सामग्री इस क्षेत्र के सांस्कृतिक, प्राकृतिक और ऐतिहासिक अनुभवों पर जुड़ी हुई हैं। यहाँ की कला का रूप केवल कलाकार की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि यह सामुदायिक परंपराओं, पीढ़ियों से प्रचलित कौशल, स्थानीय वातावरण, प्राकृतिक संसाधनों, धार्मिक-आध्यात्मिक भावानाओं और संस्कृति का संयुक्त विस्तार है। इसलिए चित्रकूट की कला में प्रयुक्त विधियों को समझना केवल एक तकनीकी अध्ययन नहीं है, बल्कि यह पूरे क्षेत्र के जीवन और संवेदनात्मक संरचना को समझने के समान है। कलाकारों से हुई बातचीत में यह बात बार-बार उभरकर सामने आई कि उनकी विधियाँ समय के साथ बदली हैं, परंतु मूलभूत आधार वही है। हाथ की सहजता, मन का धैर्य, और सामग्री के गुणों का गहरा बोधलोक चित्रों में प्रयुक्त रंग, ब्रश और सतहें स्थानीय शिल्प परंपराओं से जुड़ी होती हैं। प्राकृतिक रंगों का निर्माण स्वयं कलाकार करता है, जो शिल्प कौशल का उदाहरण है।

5.2 संरचनात्मक समानताएँ

दोहराव, सममिति और संतुलन शिल्प कला की प्रमुख विशेषताएँ हैं। यही विशेषताएँ लोक चित्रों में भी मिलती हैं।

https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 02, No 03, March 2026,, PP 69-74 (Total PP 06)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
DOI : 10.67073/GVIK8886

5.3 प्रतीकात्मकता

लोक चित्रों में भगवानराम,सूर्य, चंद्रमा, वृक्ष, पशु-पक्षी आदि प्रतीक शिल्प वस्तुओं में भी दिखाई देते हैं। यह धार्मिक सांस्कृतिक एकरूपता को दर्शाती है।

6. सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ

चित्रकूट के लोक चित्र और शिल्प कला दोनों सामुदायिक जीवन से जुड़े हैं। पर्व-त्योहार और धार्मिक अनुष्ठानों में इनका उपयोग होता है। कलाकार की भूमिका केवल सृजनकर्ता की नहीं, बल्कि परंपरा के संरक्षक की भी होती है।

7. आर्थिक और व्यावसायिक आयाम

समकालीन समय में लोक चित्र और शिल्प कला बाजार से जुड़ चुके हैं। हस्तशिल्प मेले, सरकारी योजनाएँ और निर्यात के माध्यम से इन्हें आर्थिक पहचान मिली है। इससे परंपरा का संरक्षण भी हुआ है, किंतु व्यावसायीकरण के कारण शैली में परिवर्तन भी आया है।

8. समकालीन परिप्रेक्ष्य

आज लोक कलाकार आधुनिक माध्यमों—कैनवास, ऐक्रेलिक रंग, डिजिटल प्रिंट—का प्रयोग कर रहे हैं। इससे शिल्प और चित्रकला के संबंध नए आयाम ग्रहण कर रहे हैं। परंपरा और आधुनिकता का समन्वय इन कलाओं की जीवंतता को बनाए रखता है।

9. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि विविध लोक चित्रों में शिल्प कला के अंतर्निहित आपसी संबंध बहुआयामी और गहरे हैं। लोक चित्रकला शिल्प परंपरा से प्रेरणा लेकर अपनी संरचना, तकनीक और प्रतीकों का निर्माण करती है। शिल्प कला लोक चित्रों को आधार प्रदान करती है, जबकि चित्रकला शिल्प को भावात्मक और कथात्मक विस्तार देती है। लोक कला का मूल स्रोत सहत प्रवृत्ति व धर्म, तंत्र पर मंत्र पर आधारित होता है। स्मृति चित्र में यहाँ की कला उल्लेखनीय है। जिनमें भय धर्म व स्मृति का भाव निहित होता है। यहाँ के लोक चित्रों में जीवन के क्रिया-कलापों से सम्बन्धित हर्ष, शोक एवं प्राकृतिक विपदा से सुरक्षा के उपाय के रूप में विचित्र व सृजनात्मक आकृतियां बनायी जाती है। लोक कला की प्रस्तुति, सृजनात्मक, प्रतीकात्मक तथा कल्पनात्मक भाव के लिए होती है। स्वतंत्र, स्वच्छ व बन्धन मुक्त इस कला लोक भावनाओं की प्रबल प्रस्तुति देखी जा सकती है। यहाँ की प्राकृतिक, पहाड़ी, जंगली परिवेश में लोक साहित्य लोक संगीत-नृत्य के साथ लोक कला में भूमि व भित्ति चित्र आदि का विशेष स्थान है। लोक चित्रों में यहाँ के लोक मानस की कलात्मक अभिरूचि का दर्शन होता है। स्पष्ट होता हैं कि इस क्षेत्र के लोक चित्रों में धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व छिपा हुआ है। जो विभिन्न अवसरों के चित्रों में दिखता है। इसके अतिरिक्त यहाँ कोहबर, स्वस्तिक, वेदी, पुरईन, छापा (हाथ का) कलश, वारायन, नागों का जोड़ा आदि का चित्रण भी होता है। इस प्रकार यह लोक जीवन व लोक संस्कृति के परिचायक के रूप में क्षेत्रीय कला की अपनी एक अलग व अनूठी पहचान रही है जो हमारी संस्कृति को और समृद्धि व व्यापकता प्रदान करती है और साथ ही इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराती है। आज आवश्यकता मात्र इस बात की है कि इस प्रकार से फैली तमाम आंचलिक लोक कलाओं को संरक्षण और प्रोत्साहन मिल सके। कलाएँ मिलकर भारतीय लोक संस्कृति की पहचान को सुदृढ़ करती हैं। अतः इनके संरक्षण, संवर्धन और प्रलेखन की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. चित्रसूत्र
2. भारतीय चित्रकला, पृ० 71, रायकृष्णदास ।
3. चौमास वर्ष 17, अंक 52 जून 2000, पृ० 74 डॉ० नर्मदा प्रसाद गुप्त ।
4. चौमास वर्ष 17, अंक 22, जून 2000, पृ 117, गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त ।
5. Indian Folk Arts and Crafts p-04, Jasleen Dhemeeja
6. लोक वेद, पृ० 11, डॉ0 किशोरनाथ झा।
7. मिथिला डी लोक कला शैली, प्रकाशन 2023, पृ० 227 डॉ० जयशंकर मिश्र
8. मूर्ति कला निर्माण एवं तकनीकी 2023, पृ० 128 डॉ० जयशंकर मिश्र